ज्ञानामृत

अक्तुबर, 1983
वर्ष 19 ❋ अंक 4

मूल्य 1.35

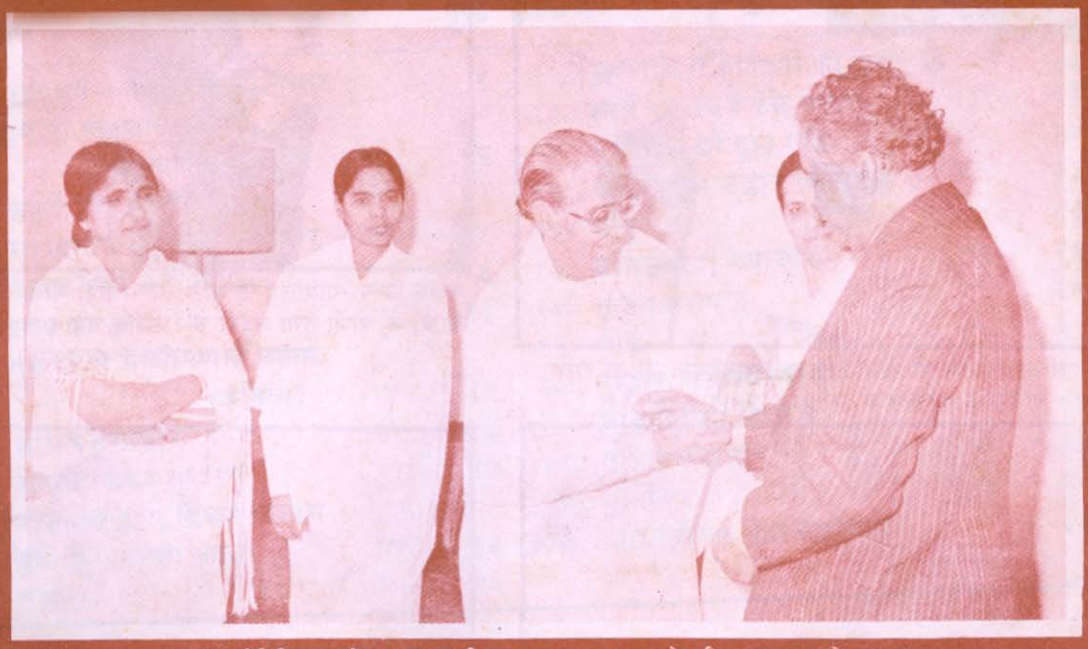

मोरिशियस के प्रधान मन्त्री भ्राता ए. जुगनाथ को पवित्रता तथा स्नेह की सूचक राखी बांधती हुई ब. कु. दादी चन्द्रमणि जी।

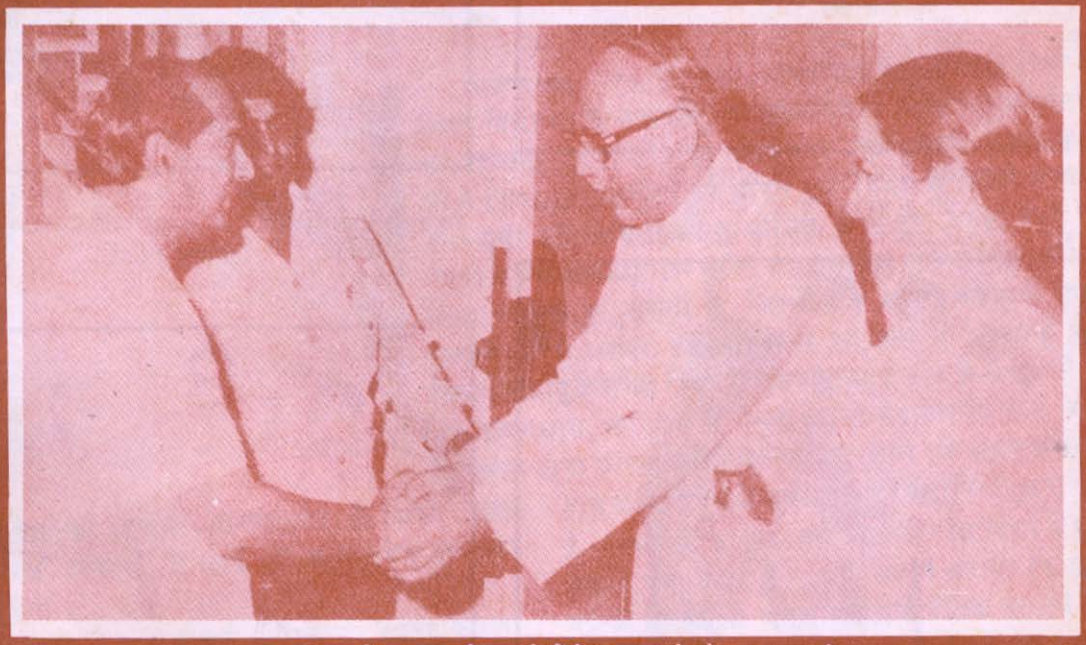

ब्र. कु. जगदीश चन्द्र जी अपनी विदेश यात्रा के दौरान ग्याना के उप-राष्ट्रपति कैमी रामस्वरुप जी से भेंट करते हुए। ब्र. कु. मोहिनी जी साथ में हैं।

नेपाल के प्रधानमन्त्री भ्राता लोकेन्द्र बहादुरचन्द जी को राखी बांधने के पश्चात् ब्र. कु. राज प्रसाद दे रही हैं।

मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता के. बी. एन सिंह जी ब्र. कु. रोज़ी तथा लक्ष्मी से राखी बन्धवाने के पश्चात् ईश्वरीय सन्देश का अवलोकन करते हुए।

गुजरात के मुख्यमन्त्री भ्राता माधवसिंह सोलंकी को ब्र. कु. सरला बहन के राखी बांधने के पश्चात् ब्र. कु. हसमुख भाई उन्हे शिव बाबा के दिव्य अवतरण के विषय में ज्ञान सुना रहे हैं।

पाण्डव भवन, माउँट आबू में गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता कुरैशी को ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि जी ईश्वरीय सौगात देते हुए।

नेपाल के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता नयन बहादुर खत्री को राखी बांधने के पश्चात् ब्र.कु. राज उन्हें प्रसाद देते हुए।

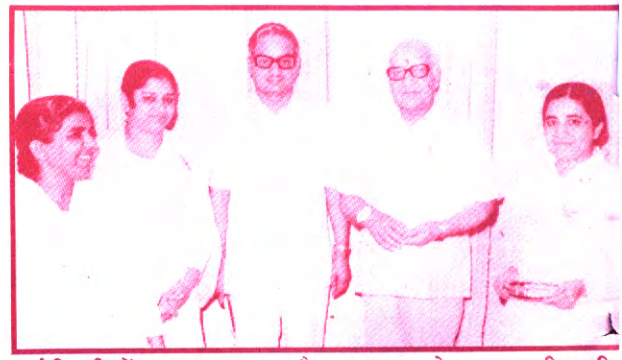

नई दिल्ली में भ्राता जगन्नाथ कौशल, भारत के न्याय मन्त्री राखी बंधवाने के पश्चात्, ब्र. कु. अमृता, विमला, भ्राता जयप्रकाश तथा इन्द्रा के साथ।

पटना में बिहार के राज्यपाल भ्राता ए. आर. किदवाई को ब्र. कु. निर्मल पुष्पा पावन राखी बांधते हुए

शिमला में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल को राखी बांधने के पश्चात् ब्र. कु. शुक्ला, ब्र. कु. अरुणा तथा अन्य राज्यपाल के साथ खड़े हैं।

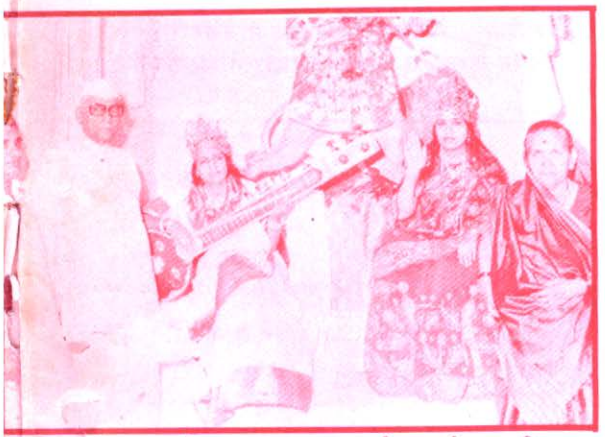

चन्डीगढ़ में पंजाब के राज्यपाल भ्राता ए.पी. शर्मा आध्यात्मिक संग्रहालय में देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् खड़े हैं।

कटक में ब्र. कु. कमलेश उडीसा के राज्यपाल भ्राता बिशम्बर नाथ पांडे को पावन राखी बांधते हुए

कलकत्ता में पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री भ्राता ज्योति वसु को ब्र. कु. बिन्दु स्नेह सूचक राखी बांध रही हैं।

भुवनेश्वर में उड़ीसा के मुख्य मन्त्री को ब्र. कु. सन्देशी राखी बांधते हुए।

Regd. No. 10563/65—D(E)—7

नई दिल्ली में न्यायाधीश भ्राता पी. एन. भगवती तथा उन की धर्मपत्नी को श्रीकृष्ण का सुन्दर चित्र देने के पश्चात् ब्र. कु. जयप्रकाश, ब्र. कु. विमला तथा इन्द्रा उन के साथ खड़े हैं।

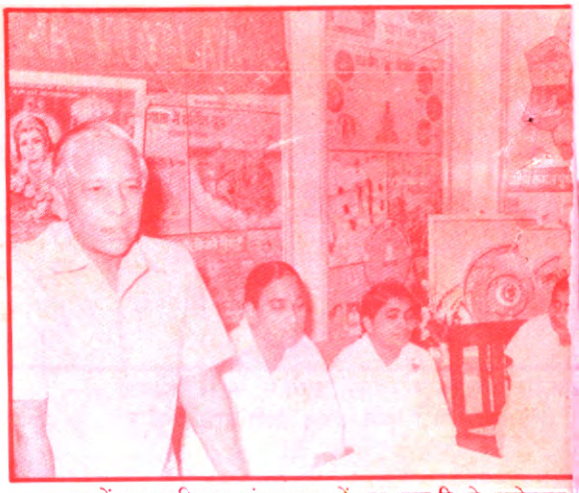

कटक में आध्यात्मिक संग्रहालय में जन्माष्टमी के महोत्सव प्रवचन करते हुए उड़ीसा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्रात दाम्बरूधर पाठक जी।

इलाहाबाद में मूर्धन्य साहित्यकार महादेवी वर्मा बहिन को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मनोरमा।

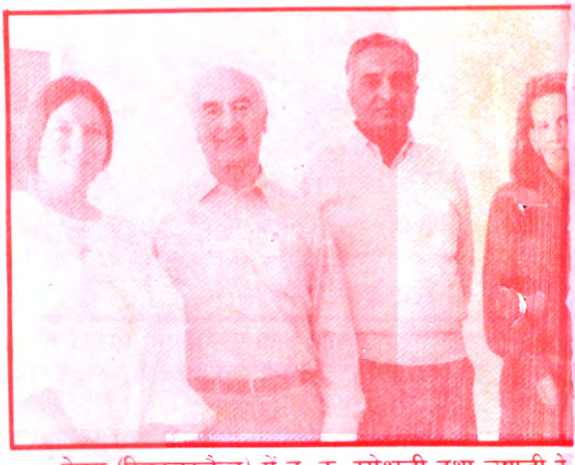

डेवस (स्विटजरलैन्ड) में ब्र. कु. रमेशजी तथा उषाजी ने ट्रान्सपर्सनल सम्मेलन में भाग लिया। चित्र में ब्र. कु. रमेश प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. एलफर्ड हाफमैन के साथ खड़े है। ब्र. हायेडी, लयुनोर साथ में हैं।

ब्र. कु निर्वैर जी के सिंगापुर में पधारने पर मैरिन परेड कम्युनिटि सैन्टर पर राजयोग प्रवचन करते हुए।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	युवा वर्ग—नए विश्व की आशा	१	१२.	नवरात्रि में शक्तियों की पूजा	२०
२.	हमारा महाशत्रु कौन ? (सम्पादकीय)	२	१३.	व्यर्थ को समर्थ कैसे बनाएं	२१
३.	अपूर्ण और सम्पूर्ण	४	१४.	गुप्त दान की गुह्य गति	२२
४.	रक्षाबन्धन—सचित्र समाचार	५	१५.	कर लो तुम उद्धार (कविता)	२३
५.	रावण अभी मरा नहीं	६	१६.	सन्तुष्टता	२४
६.	सत्य का संग	११	१७.	सचित्र सेवा समाचार	२५
७.	तुम भी ले आओ अपना रावण (कविता)	१२	१८.	महान आत्माएं	२६
८.	सचित्र समाचार	१३	१९.	गीत	३१
९.	सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	१७	२०.	तुम्हारी कमजोरियां ही तुम्हारे लिए विघ्न हैं	३२
१०.	राजयोग द्वारा विकर्म विनाश होते हैं—उसका सबूत	१९	२१.	सचित्र समाचार	३३
११.	नम्रता	२०	२२.	रामायण	३८
			२३.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३९

युवा वर्ग—नए विश्व की आशा ।

—ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि

माउण्ट आबू—१९ सितम्बर, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय में "युवा वग प्रदर्शनी" का उद्घाटन संस्था की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणी जी ने किया। इस अवसर पर भारत एवं विदेश से पधारे लगभग २०० युवा प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि "युवा वर्ग में आध्यात्मिक शक्ति का समावेश होने से विश्व में एक दिव्य क्रान्ति आ सकती है, जिसके फल स्वरूप वर्तमान समय उत्पन्न अनेक प्रकार की समस्याओं का अन्त हो सकता है एवं विश्व, नव निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ ले सकता है।

पावनधाम, ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी वेदान्तानंद जी ने कहा कि संस्था द्वारा धारण कराये जा रहे इस ज्ञान एवं सहज साधना की देश को अत्यन्त आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र निर्माण के कार्य में आवश्यमेव सफलता मिलेगी।

संस्था के जन सम्पर्क अधिकारी भ्राता करूणा जी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा १९८५ वर्ष को युवा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, ईश्वरीय विश्व विद्यालय संयुक्त राष्ट्र में अप्रशासकीय सदस्य होने के नाते पूर्व में युवा वर्ष की तैयारियां कर रहा है। दिव्य रंगीन युवा वर्ग प्रदर्शनी इस दिशा में एक महत्व पूर्ण कदम है। आगे आपने बताया कि युवा वर्ष में युवकों में अनुशासन एवं नैतिक उत्थान की दिशा में विभिन्न रचनात्मक कार्य करने हेतु संस्था के ५० हज़ार युवकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। ✳

हमारा महाशत्रु कौन ?

जिस से दुःख मिले अथवा जिससे हानि होने की सम्भावना हो, उसे 'शत्रु' कहा जाता है। इस दृष्टिकोण से आज भारतवासी समझते हैं कि पाकिस्तान या चीन हमारे शत्रु हैं।

देशों और व्यक्तियों के बीच मित्रता या शत्रुता परिवर्तनशील है। इस कलियुगी संसार में आज यदि कोई मित्र है तो कल वह शत्रु हो जाता है और यदि कल तक कोई देश शत्रु था तो आज उसका मित्र बन जाना भी सम्भव है। देशों के बारे में कही गई यह बात व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी ठीक घटती है। व्यक्तियों में भी मित्रता के भाव बदलकर शत्रुता का रूप धारण कर लिया करते हैं।

परन्तु जिस महाशत्रु ने हर एक व्यक्ति और हर एक देश को दुःखी कर रखा है और जो सभी को हानि पहुँचाने वाला है, उस शत्रु की तरफ आज कोटि-कोटि व्यक्तियों में से किसी बिरले ही का ध्यान है। वह शत्रु है 'रावण' या 'माया' अर्थात् पांच विकार—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। पिछले दिनों लंका में हुए झगड़ों में पीड़ित हुए लोग तो लाखों की संख्या में थे परन्तु इन विकारों से तो सभी नर-नारी पीड़ित हैं। किसी वैरी मनुष्य अथवा किसी शत्रु देश से तो एक-आध जन्म दुःख मिला होगा परन्तु इन विकारों ने तो मनुष्य को जन्म-जन्मान्तर दुखी किया है।

देशों की पारस्परिक शत्रुता भी विकारों के कारण

वास्तव में देशों और व्यक्तियों में भी जो लड़ाई अथवा शत्रुता होती है उसका कारण भी अहंकार, काम, क्रोध, लोभादि विकारों में से ही कोई विकार होता है। उदाहरण के तौर पर भारतवासियों के आपसी **मतभेद** और अंग्रेजों के **लोभ** ने ही भारत को परतन्त्र बनाकर दुखी किया। वास्तव में तो ये पाँच विकार ही हर देश अथवा व्यक्ति के शत्रु हैं। यह जो पांच विकार हर स्त्री में और पाँच विकार हर पुरुष में हैं, इन्हीं का प्रतीक दस सिरों वाला रावण है, जिसका बुत हर वर्ष भारतवासी जलाते हैं क्योंकि वह हमारा महाशत्रु है।

एक समय था जबकि भारत में एक ही मत था और यहां के लोग पवित्र और निर्विकारी थे। उस समय को 'सतयुग' नाम से याद किया जाता है। उस समय के भारत को 'देवभूमि' कहा जाता है। तब भारत में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण इत्यादि देवी-देवता अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी राज्य करते थे। **उनके राज्य में एक भी शत्रु न था क्योंकि विकार रूपी शत्रु नहीं थे।** उस मम्य यह भारत स्वर्ग था। जब यहां के लोग विकारी और आसुरी स्वभाव वाले बने तभी यहां पर मतभेद, शत्रुता, क्लह-क्लेश, लड़ाई-झगड़ा इत्यादि हुए और यह देश नरक और परतन्त्र बन गया।

अतः वास्तव में तो पहले इन महाशत्रुओं का नाश करने की आवश्यकता है। परन्तु आश्चर्य की बात देखिये कि बहिर्मुखता के कारण सभी लोगों, नेताओं, समाचार-पत्रों आदि-आदि का ध्यान जन्म-जन्म जलाने वाले और आदि, मध्य, अन्त दुःख देने वाले इन महाशत्रुओं (विकारों) की ओर न होकर बाहिर के शत्रुओं की तरफ है। यह बात तो कोई विरला ही समझता है कि हम सभी आत्माएं रूपी सीताऐं विकारों रूपी रावण की जेल में हैं और इस रावण से हमें स्वतन्त्र या मुक्त होना है। भले ही वे रावण के कागजी पुतले को हर वर्ष जलाते हैं परन्तु रावण के बारे में वास्तविकता न जानने के कारण वे विकारों रूपी रावण को योगाग्नि से नहीं जलाते अतः अब याद रखना चाहिए कि **वास्तव में व्यक्ति नहीं विकार ही हमारे दुश्मन हैं। इन विकारों पर विजय प्राप्त करने से मनुष्य जगतजीत बन जाता है और देश के लोग अत्यन्त सुखी बन जाते हैं।**

सभी पापों की जड़

इन विकारों में भी 'देह-अभिमान' नाम का जो विकार है, वह विकारों की जड़ है। वह सभी पापों का मूल है। स्वयं को आत्मा की बजाय देह निश्चय करना, यही सबसे बड़ी भूल है। इससे अन्य सभी भूलें पैदा हुई हैं। आप नोट कीजिए कि जब मनुष्य देहाभिमान के कारण 'पुरुष-पन' अथवा 'स्त्री-पन के भान में आ जाता है तो वह **'काम'** रूपी विकार के वशीभूत होता है। स्वयं को देह मानने के कारण ही अन्य देह-धारियों **से मोह** का सम्बन्ध जुटता है और उनके शरीर छोड़ने पर मनुष्य दुःख मानता है। देह-अभिमान के कारण स्वयं को बड़ा मानकर **क्रोधान्वित** होता है। इस प्रकार आज सभी नर-नारी देह-अभिमानी अर्थात् आसुरी स्वभाव वाले हो चुके हैं और एक-दूसरे के शत्रु हो गए हैं। देह-अभिमान ने सभी की दृष्टि, वृत्ति और स्मृति को विकारी बना दिया है।

हमारा महाशत्रु 'काम'

भले ही पाँच विकार हमारे शत्रु हैं और देह-अभिमान उनका मूल है परन्तु उन सभी का सरदार यह काम विकार ही है। इस सैनापति को जीतने से अन्य सभी सैनिक हथियार डाल देते हैं। नाम इसका 'काम' है परन्तु वास्तव में सभी काम बिगाड़ने वाला शत्रु यही है। यदि देह-अभिमान को नर्क की दहलीज़ कहें तो यह 'काम' ही नर्क का मुख्य द्वारा (सिंहद्वार) है। आज सारे विश्व में इन ५ विकारों का बोल बाला है। **आप ही सोचिये कि भला इन विकारों से बड़ा शत्रु और कोई हो सकता है ? दूसरे जो शत्रु हैं, वे सर्वव्यापी नहीं हैं परन्तु इन विकारों रूपी शत्रुओं ने तो सभी को अपने फन्दे में डाल रखा है। इन्होंने तो आज भाई-भाई को, पिता-पुत्र को, स्त्री-पुरूष को भी आपस में शत्रु बना दिया है। यह तो घर का शत्रु है और इसकी सेना तो देखिये, कितनी बड़ी है ! यह शत्रु तो बड़ी मजबूती से जमा हुआ है क्योंकि इसने तो शताब्दियों से डेरे अथवा डोरे डाल रखे हैं ! अतः इस सर्वव्यापी शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला नर सारे विश्व का मालिक बन सकता है—इतनी बड़ी प्राप्ति होती है इसको पराजित करने से।**

—जगदीश

झूठों की लंका का खातमा अब होने ही वाला है

हाँ, अब विकारों से बोझिल
पापों के कीचड़ से पंकिल
अपनी असुरता में उन्माद-विह्वल
मिथ्या दम्भ और अहंकार में अति चंचल
बाहर से स्वर्णिम किन्तु भीतर से सर्वथा अविमल
पाशविक शक्ति से सम्पन्न किन्तु आत्मिक दृष्टि से सर्वथा निर्बल
सत्ताधारी और सुविधावादी वर्गों के लिये 'सुख-संकुल'
किन्तु जन-मन की व्यापक व्यथा से अतिशय व्याकुल
अब ऐसी काल-जर्जर पुरानी सृष्टि का
इसके आचार-विचार और कार्य-कलाप की समष्टि से
अन्त और अवसान अब होने ही वाला है
समस्त पुरातन का तिरोधान अब होने ही वाला है
बाहर से जितनी सुखी, भीतर से उतनी दुःखी
बाहर से जितनी हरी भरी भीतर से उतनी सूखी-सूखी
इस झूठों की लंका का खातमा अब होने ही वाला है !

अपूर्ण और सम्पूर्ण

—ले० ब्रह्माकुमारी लीला, कश्मीरी गेट, दिल्ली

संसार में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो शक्ति में, ज्ञान में, योग्यता में, दिव्यगुणों में और सुख-शान्ति में स्वयं को 'सम्पूर्ण' कह सके। जन्म-मरण और सुख-दुःख के चक्कर में पड़ा हुआ हरएक व्यक्ति 'अपूर्ण' ही है। **अतः असम्पूर्णता (अपूर्णता) ही मनुष्य का एक ऐसा दोष है जिससे ही अन्य सब दोष आते हैं। मनुष्य में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, इसलिए वह भूल कर बैठता है। उसमें सम्पूर्ण शक्ति नहीं है, इसलिए वह माया से हार खा बैठता है। उसमें सम्पूर्ण शान्ति नहीं है, इसलिए वह विषयों में रस को ढूँढता है।** इससे सिद्ध हुआ कि अज्ञान, अशान्ति, निर्बलता, पराधीनता तथा जन्म-मरण के दुःखों से मनुष्य तभी छूट सकता है जब वह सम्पूर्ण हो। अतः हर एक मनुष्य सम्पूर्ण (Perfect) बनना चाहता है। यही कारण है कि वह अधिक ज्ञान, अधिक शान्ति, अधिक शक्ति, अधिक सुख की अभिलाषा करता है और उसके लिए पुरुषार्थ भी करता है।

अब यद्यपि मनुष्यात्माएं स्व-स्व अनुसार ज्ञान, शान्ति, शक्ति, दिव्यगुण अधिक से अधिक सीमा तक प्राप्त कर सकती हैं तो भी वो परमात्मा नहीं हो सकतीं क्योंकि परमात्मा तो एक ही अजर, अमर, ज्ञान और शान्ति का सागर है। सभी आत्माओं की भेंट में सदा और सर्वथा सम्पूर्ण-आत्मा तो एक ही है जिस ही को 'परमात्मा' कहा जाता है। उसके बाद देवताएँ ही ऐसे व्यक्ति हैं कि जिन्हें मनुष्यों की भेंट में दिव्य गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सुख और शान्तिमय, जन्म-मरण के दुःख से रहित कहा जाता है। उनमें भी कुछ तो सोलह कला सम्पूर्ण अर्थात् 'सूर्यवंशी' गाये जाते हैं और कुछ चौदह कला सम्पूर्ण 'चन्द्र वंशी' प्रसिद्ध हैं। **अतः मनुष्य यदि सम्पूर्ण बनना चाहे तो वह चौदह कला या सोलह कला सम्पूर्ण मानव बन सकता है। इससे अधिक उसको कोई पद प्राप्त नहीं हो सकता। अर्थात, यही उसकी सम्पूर्ण स्टेज (Stage अवस्था) है।** परन्तु इसके विपरीत अब तो मनुष्य पूर्ण रीति दुःखी, विकारी और अशान्त है तथा अज्ञान और आसुरी गुणों से युक्त है अर्थात् सुख, शान्ति और शक्ति के विचार से वह बिल्कुल ही अपूर्ण है।

अतः प्रश्न उठता है कि अपूर्ण से सम्पूर्ण अथवा विकारी मनुष्य से बदल कर सोलह कला सम्पूर्ण देवी या देवता पद कैसे प्राप्त किया जा सकता है? हम जीवन में देखते हैं कि बहुत-से व्यक्ति अपने से महान् व्यक्ति के सम्पर्क से अथवा बहुत से महान् व्यक्ति आपस के संगठन से अपनी अपूर्णता को पूर्ण करने का पुरुषार्थ करते हैं। अतः सम्पूर्ण देवता बनने के लिए मनुष्य के पास भी एक ही उपाय है। **स्पष्ट है कि जो असम्पूर्ण (अपूर्ण) मनुष्य हैं उनके सहयोग से तो सम्पूर्ण देवता बना ही नहीं जा सकता। अपूर्ण मनुष्य की स्थिति से उठकर सम्पूर्ण देवता बनने के लिए, देवों के देव जो एक परिपूर्ण परमात्मा हैं और उन द्वारा सम्पूर्ण देवता बनने का पुरुषार्थ करने वाले जो मनुष्य हैं उन्हीं का सहयोग, सम्पर्क और संगठन आवश्यक है।** परन्तु यह तभी सम्भव और प्राप्तव्य है जबकि सम्पूर्ण विकारी सृष्टि को फिर से सम्पूर्ण निर्विकारी दिव्य-गुण सम्पन्न, सुख-शान्तिमय और जन्म-मरण के दुःखों से रहित बनाने के लिए, अर्थात् अपूर्ण से पूर्ण बनाने के लिए एक परिपूर्ण परमात्मा आदिदेव ब्रह्मा के साधारण तन से ज्ञान दें। अतः गीता में भगवान् के महावाक्य हैं कि जब अति धर्म-ग्लानि होती है अर्थात् जब सभी मनुष्यात्माएं, ज्ञान, शान्ति और आत्मिक शक्ति के विचार से पतित एवं 'अपूर्ण' हो जाती हैं यानी सम्पूर्ण विकारी हो जाती हैं और देवी-देवता धर्म की सभी आत्माएं सम्पूर्ण आसुरी हो जाती हैं, तो मैं सदा सम्पूर्ण-आत्मा (परमात्मा) उनको ज्ञान देकर और ज्ञान द्वारा शक्ति, शान्ति, दिव्यगुण और सुख देकर फिर से सम्पूर्ण देवता बनाता हूँ। तो विवेक की बात है, कि सम्पूर्ण बनने की अभिलाषा वाले मनुष्यात्मा को चाहिए कि वर्तमान धर्म-ग्लानि के समय अनेक असम्पूर्ण, लौकिक गुरुओं, उनके अपूर्ण सत्संगों, उन द्वारा रचे गए शास्त्रों से बुद्धि योग हटाकर एक सम्पूर्ण ज्ञानवान् परमात्मा 'शिव' ही से सन्मुख ज्ञान और योग की शिक्षा द्वारा सम्पूर्ण पुरुषार्थ करे। ◻

रक्षाबन्धन– सचित्र समाचार

गांधीनगर में ब्र. कु. कैलाश, गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता नटवर लाल शाह को आत्म–स्मृति का तिलक देते हुए।

शिलांग में आसाम तथा मेघालय के राज्यपाल भ्राता प्रकाश मेह जी को ब्र.कु. नीलम स्नेह सूचक राखी बांधते हुए।

शिमला में ब्र.कु.अरुणा हिमाचल प्रदेश के विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता टी.एस. नेगी जी को आत्म–स्मृति का तिलक देते हुए।

सिकन्दराबाद में ब्र.कु. कल्पना, आंध्र प्रदेश के राज्यपाल भ्रा रामलाल जी को पावन राखी बांधते हुए।

गोआ दमन दियू कें मुख्य मन्त्री भ्राता प्रताप सिंह राणे जा का ब्र.कु. शोभा पावन राखी बांधते हुए।

बम्बई में ब्र.कु. सुनिता और ब्र.कु. हंसा, महाराष्ट्र के उप-म मन्त्री भ्राता रामराव आदिक को पावन राखी बांधते हुए।

नेपाल राष्ट्रीय पंचायत के अध्यक्ष भ्राता मान सिंह जी को ब्र. कु. राज पवित्रता की सूचक राखी बांधती हुए

नेपाल के न्याय तथा कानून मंत्री भ्राता बखान सिंह गुरुंग जी को ब्र. कु. शीला राखी बांधते हुए

राखी पर मन्त्रियों, मुख्यमन्त्रियों को ईश्वरीय सन्देश

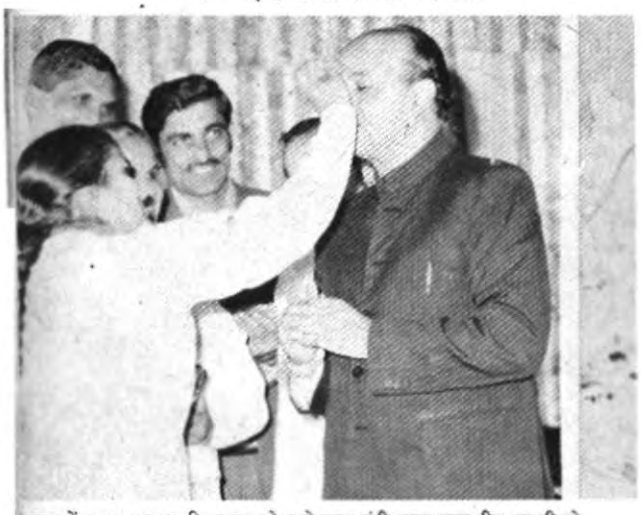

मला में ब्र. कु. अरुणा, हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री भ्राता राजा वीर भद्र जी को आत्मस्मृति का तिलक देते हुए।

पुरी में ब्र. कु. निरुपामा, उड़ीसा के कानून तथा वित्तमंत्री भ्राता रघुनाथ पटनायक को पावन राखी बांधते हुए।

नैनीताल में ब्र. कु. शीला , पर्वतीय विकास मंत्री भ्राता बलदेव सिंह आर्य को स्नेह-सूचक राखी बांधते हुए।

शिमला में ब्र. कु. शुक्ला, हिमाचल प्रदेश के विपक्ष नेता भ्राता शांता कुमार जी को आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

तन्दूर में ब्र. कु. नंदा, कर्नाटक के दुग्ध गंगा तथा उद्यान मंत्री भ्राता विश्वनाथ रेड्डी जी को पावन राखी बांधते हुए।

नेपाल के शिक्षा राज्य मंत्री भ्राता फतेह सिंह थारु को ब्र. कु. राज पावन राखी रही है।

यवतमाल में ब्र. कु. नलिनि बहिन, महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री भ्राता सुधाकर राव नायक को स्नेह सूचक राखी बांधते हुए।

कलकत्ता में ब्र. कु. किरण, ट्रांसपोर्ट मंत्री भ्राता मुखर्जी को पावन राखी बांधते।

वारंगल में ब्र. कु. उरुणा, आंध्र प्रदेश के शिक्षा मंत्री भ्राता आनंद गज पतिराज को राखी बांधते हुए।

कलकत्ता में ब्र. कु. विन्दु, पश्चिम बंगाल के निगम मंत्री भ्राता प्रशांत कुमार सू पावन राखी बांधते हुए।

रचम बंगाल के जेल एवं समाज कल्याण मंत्री भ्राता देवव्रत बंदोपाध्याय को ब्र. कु. गीता पावन राखी बांधते हुए।

पटना में ब्र. कु. निर्मल पुष्पा जी, बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता चन्द्रशेखर सिंह जी को आत्मस्मृति का तिलक देते हुए।

राज्यों के मुख्य मन्त्रियों तथा मन्त्रियों को रक्षा बन्धन पर ईश्वरीय सन्देश

क में ब्र. कु. कमलेश, उड़ीसा के शिक्षा मंत्री भ्राता गंगाधर मोहपात्रा जी को पावन राखी बांधते हुए।

कटक में ब्र. कु. कमलेश, उड़ीसा के कृषि मंत्री भ्राता वासुदेव मोहपात्रा जी को पावन राखी बांधते हुए।

सोलापुर में ब्र. कु. सुभद्रा, महाराष्ट्र के अर्थ मंत्री भ्राता सुशील कुमार शिंदे जी को पावन राखी बांधते हुए।

देवास में ब्र. कु. निशा, मध्य प्रदेश के हरिजन एवं आदिम कल्याण राज्यमंत्री भ्राता बापूलाल मालवीय को पावन राखी बांधते हुए।

रावण अभी मरा नहीं है

इसे ज्ञान-योगाग्नि से जलाएं

(ब्र० कु० राज, जालन्धर)

भारत में प्रति वर्ष, नगर-२ में रावण के बुत को जलाकर लोग हर्ष का अनुभव करते हैं। इस प्रकार वे राम के प्रति अपनी श्रद्धा व रावण के प्रति घृणा का प्रदर्शन करते हैं। यह सिलसिला हजारों वर्षों से चल रहा है। इन दिनों जन जन के मन पर राम की गाथाएं उभर उठती हैं। कोई उनके महात्याग के आगे नतमस्तक होता है तो कोई उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहकर उनका आदर करता है। कोई उन्हें प्रभु का अवतार मानकर मन से उनका गुणगान करता है और कोई उन्हें असुर संहारक समझकर आज भी उनकी आवश्यकता महसूस करता है। इस प्रकार सारे भारत में वातावरण धार्मिक प्रकम्पनों से भर-पूर हो जाता है।

रावण-दहन के उपरान्त सभी लोग जब खुशी खुशी घर लौटते हैं तो चारों ओर से आवाज़ सुनाई देती है कि "रावण जल गया"। उसे प्रतिवर्ष जलाया जाता है। परन्तु कोई भी मनुष्य अपने अन्तर में छुपे रावण को पहचानने का प्रयास नहीं करता। यदि रावण का बुत जला कर भी मनुष्य को इतना हर्ष होता है जो उसे आसुरी प्रवृत्तियों से घृणा हो जाती है तो अन्तरमन के रावण को जलाकर मनुष्य को कितना परमानन्द अनुभव होगा !

रावण की दुश्मनी राम से थी और रावण मारा गया। परन्तु मरने के बाद किसी का बुत जलाने का क्या प्रयोजन ? रावण के कारनामे राक्षसी थे, उसका वध हो गया, अब उससे हमारी क्या दुश्मनी ! ये रहस्य जानने आवश्यक हैं।

रावण क्या है ?

वास्तव में रावण, त्रेतायुग में लंकाधिपति नहीं था। परन्तु वह द्वापुरयुग से और कलियुग अन्त तक विश्वाधिपति रहा और कलियुग अन्त में आकर सर्व-शक्तिवान ने उसके शासन का अन्त किया। रावण मनोविकारों का प्रतीक है। उसके १० शीश मानव की बुद्धि में बैठे १० विकारों के प्रतीक हैं। इसीलिए रावण के १० शीश प्रसिद्ध हैं। ये दस शीश हैं—काम महाशत्रु, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, तृष्णाएं, ईर्ष्या द्वेष, आसक्ति, आलस्य और अनुमान। ये मनोविकार ही मनुष्य की राक्षसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते हैं। अतः इस प्रत्येक मन में बैठे रावण को जानकर इसका सर्वनाश करना नितान्त आवश्यक है।

रावण बढ़ रहा है—

प्रत्येक दशहरे पर भारत के मुख्य नगरों में रावण के बुत की लम्बाई बढ़ा दी जाती है। इसका कारण ? मन में छुपा रावण वैसे तो दिखाई नहीं देता, परन्तु इसकी लम्बाई दिनों दिन बढ़ रही है। यह बात प्रत्यक्ष है। संसार में आज मानव काम क्रोध की अग्नि में भस्मी-भूत हुआ जा रहा है। मनुष्य के मन की तृष्णाएं बढ़ कर उसे अधिक अशान्त कर रही हैं। मोह मनुष्य को नचा रहा है। अहंकार अपने प्रभाव को बढ़ाकर बुद्धि बल को नष्ट करता जा रहा है। मनुष्य का आपसी स्नेह घट रहा है। मानव की कीमत गिर रही है। सज्जन पुरुष कलि के अन्धकार में विलीन हो रहे हैं और दुर्जनों की धाक जम रही है। परन्तु आश्चर्य कि मनुष्य को इस असली रावण का अहसास ही नहीं है।

सीताओं की पुकार

इस मनोविकारों रूपी रावण का प्रभाव आज प्रत्येक मनुष्यात्मा पर है। अर्थात् हर आत्मा रूपी सीता रावण के प्रभाव में यानि जेल में है। तो वास्तव में यह रावण राम का शत्रु नहीं, सीताओं का अर्थात् मनुष्यात्माओं का शत्रु है। बहुत काल से अर्थात् द्वापुर युग से रावण की जेल में बन्द सीताएं अब व्याकुल हो उठी हैं और वे राम की पुकार कर रही हैं। वे राम के आगमन की आशा में आशा की ज्योति जलाए बैठी हैं।

राम का आह्वान—अब इस रावण को जलाओ

रावण का बुत तो प्रतिवर्ष जलाया, परन्तु अब

समय है असलो रावण को जलाने का। सीताओं की पुकार सुनकर राम भला कैसे नहीं आयेंगे। वे अब इस धरा पर आकर सीताओं का आह्वान कर रहे हैं। "हे सीताओ ! तुम निराश मत होओ—तुम्हारा राम तुम्हें इस जेल से छुड़ाने आ चुका है। अब आवश्यकता है कि तुम इस रावण से मुंह मोड़ो। तुमने ही श्रीमत की लकीर को लांघ कर रावण का हाथ पकड़ा था। अब इस महापापी का हाथ छोड़ो। और मुझ राम का हाथ पकड़ो।"

अब राम व रावण का संगम है

प्रसिद्ध है कि देवों की पुकार पर भगवान ने अवतार लिया था। क्योंकि रावण का संहार करने में अन्य कोई भी समर्थ नहीं था। सभी देवों ने भी उस राक्षस का आधिपत्य स्वीकार कर लिया था। ठीक यही स्थिति अब है। इन मनोविकारों ने सभी मनुष्यों, विद्वानों व संन्यासियों पर अपना अधिकार कर लिया है। और इस रावण का संहार करने की शक्ति अब किसी में भी नहीं है। अतः अब सर्वशक्तिवान स्वयं ही इस रावण का संहार करने आये हैं। वे ब्रह्मा के दिव्य रथ पर सवार हैं। वे सभी को ज्ञान बाणों, दिव्य शस्त्रों से सुसज्जित करके, शक्ति का वरदान देकर रावण के संहार के लिए युद्ध क्षेत्र में उतार रहे हैं। अतः अब इस युद्ध क्षेत्र में एक ओर महाराक्षस, मानवता का महान शत्रु रावण है व दूसरी ओर सर्वशक्तिवान व उनकी शक्ति सेना है।

राम की सेना में भर्ती हो जाओ

सर्व विदित है कि राम ने वानरों की सेना ली थी और उनमें शक्ति भरकर रावण का संहार किया था। ये वानर शब्द वास्तव में नर से ही बना है। अर्थात वे नर जो वानर समान वृत्तियों वाले हो गये थे। अतः अब पुनः राम की सेना में भर्ती होने की बारी है। अब समय है परमात्मा से बल लेकर, ज्ञान रूपी बाणों से इस अन्तर में छुपे हुए रावण को भस्म करो। जो आत्माएं राम की सेना में भर्ती होंगी वे रावण के आधिपत्य से मुक्त होकर प्रभु के साम्राज्य में चली जाएंगी।

अग्नि बाण से रावण को भस्म करो

भारतवासी जानते हैं कि राम के बाणों से जब रावण का शीश कटता था तो वहां तत्काल ही दूसरा शीश प्रकट हो जाता था। तो जब राम ने देखा कि इस प्रकार तो रावण मरने वाला नहीं है तो उन्होंने विभीक्षण की राय से उसके पेट में अग्नि बाण मारा और रावण सदा के लिए सो गया। तो वास्तव में ही रावण मायावी, अनेक रूपधारी है। उसके एक-एक रूप को भस्म करना योगियों के लिए भी नितान्त कठिन काम है। अतः परमात्मा ने स्वयं राजयोग सिखाया है। यह योग ही अग्नि बाण है। इस योग की अग्नि से ही रावण के समस्त रूपों को एक ही साथ भस्म किया जा सकता है। अतः जो लोग रावण का संहार करना चाहते हैं वे परमात्मा से योगाग्नि बाण प्राप्त करें।

अब रामलीला चल रही है

लोग रात भर रामलीला देखकर गद्‌गद् हो उठते हैं और वे मनुष्यात्माएं कितनी आनन्दित होती होंगी जिनके नयन सम्मुख ही अति सुखदाई व मनोहारी रामलीला देख रहे हैं। अब निराकार परमात्मा राम के पुनीत कर्त्तव्य पुनरावृत्त हो रहे हैं। हम उन्हें नयनों से देख सकते हैं। इतना ही नहीं, उनके सत्य पात्र बन सकते हैं। अतः रामलीलाएं तो बहुत देखीं अब राम के प्रत्यक्ष कर्त्तव्यों का अवलोकन करो।

अब राम हमें छुड़ाने आया है परन्तु ऐसा न हो कि राम हमें छुड़ाने आया है और हम रावण स्नेही ही बने रहें। रावण की भयानकता को पहचानकर और रामराज्य के सुखों का स्मरण करके, इस दुखदाई शत्रु को जड़ से उखाड़ फेंकें। यदि हम अब भी राम की पुकार पर रावण की जेल नहीं छोड़ेंगे तो इसके दोषी हम ही होगें। और राम अपना कर्त्तव्य समाप्त करके वापिस लौट जायेंगे और हमें उनके कर्त्तव्यों को याद करके केवल पछताना ही पड़ेगा।

सत्य का संग

लेखिका : ब्रह्माकुमारी चक्रधारी,
दिल्ली

प्यारे बच्चो, तुमने अपनी दादी माँ अथवा नानी माँ से कई प्रकार की कहावतें सुनी होंगी। कुछ न कुछ तुमने अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों में भी पढ़ी होंगी, उनमें से कुछ तुमको याद भी हो गई होंगी। परमपिता शिव बाबा भी हमें कुछ इस प्रकार से बोल सुनाते हैं जैसे 'जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण', जैसा अन्न वैसा मन,' 'जैसा पानी वैसी वाणी', 'जैसे विचार वैसा व्यवहार'। इसी प्रकार तुमने यह भी सुना होगा 'जैसा संग वैसा रंग' अथवा 'सत का संग तारे, कुसंग डुबोये' अथवा A man is known by the company he keeps (मनुष्य अपनी संगत से पहचाना जाता है) अथवा Good Company makes Good men (अच्छे संग से अच्छे जादमी बनते हैं)। मेरा कहने का भावार्थ यह है कि हम किन से दोस्ती करते हैं, किसका संग करते हैं, इससे हमारे चरित्र पर बहुत प्रभाव पड़ता है। संग के बारे में ही एक और कहावत भी है कि 'सत्य की नैया डोलेगी मगर डूबेगी नहीं' इसी बात पर मुझे एक किस्सा याद आता है जो मैंने अपने बचपन में सुना था, वही मैं तुमको आज सुनाती हूँ।

यह बात हरिद्वार की है। गंगा के तट पर अनेक तीर्थ यात्री (बच्चे, बूढ़े, जवान, पुरुष, महिलायें) पहुँचे हुए थे गंगा में स्नान करने के लिए। एक स्थान पर कुछ नौकाएँ भी खड़ी थीं। जो यात्री इस पार से उस पार जाना चाहते थे, वे एक नाविक को बुलाते, नैया में बैठते और नाविक गीत गाता, चप्पु चलाता ले चलता उन्हें उस पार। इस प्रकार आने और जाने वालों का ताँता सा बंधा हुआ था।

शाम होने वाली थी, सूर्यास्त होने ही वाला था। किनारे पर खड़े कुछ यात्रियों ने एक नाविक को आवाज़ लगाई "ऐ नैया वाले, हमें शीघ्र ही उस पार जाना है।" नाविक आवाज़ सुनकर जल्दी से अपनी नैया की रस्सी खोलकर आगे आ गया। यात्री उसमें सवार हो गये। उन यात्रियों में एक दो वृद्ध महिलायें भी थीं। नौका आगे बढ़ने लगी। अरे, यह क्या, बीच मंझदार में पहुँचते ही नौका डोलने लगी ! किनारे पर खड़े लोग चिल्लाने लगे। नैया में बैठे हुए लोगों के दिल भी धड़कने लगे। सब प्रभु को पुकारने लगे। वे सभी भयभीत थे कि अब क्या होगा। वे सब अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे थे। नाविक नैया को बहुत संभालने की कोशिश कर रहा था परन्तु भरसक प्रयत्न करने के बावजूद भी लगता था कि बस, अभी नैया उलट जाएगी। नाविक चिल्ला कर बोला— "अवश्य ही इस नैया में किसी यात्री के पास कोई झूठ अथवा चोरी का सामान है, इसीलिए ऐसा हो रहा है। जिसके पास भी ऐसा सामान है, कृपया वह चुपचाप उसे जल-प्रवाहित कर दे, वरना वह खुद तो डूबेगा ही, सबको भी ले डूबेगा और जीव-घात के पाप का भी भागी बनेगा।" वह प्रार्थना करता हुआ बोला "कृपया जल्दी करें, अधिक विलम्ब न करें, वर्ना हाथ से निकला समय वापस नहीं आयेगा।" सभी यात्री गण एक-दो का चेहरा देखने लगे। आपस में खुसर-पुसर भी होने लगी, कुछ थोड़ा ऊँचे शब्दों में भी बोल उठते, अरे भई, जल्दी करो, थोड़ी-सी चीज़ के पीछे सभी की ज़िन्दगी खत्म करने के निमित्त न बनो।"

उस नौका में एक अति साधारण वृद्ध महिला भी थी जिसके पास पूजा का सामान तो था परन्तु ठाकुर जी की मूर्ति न थी। सो वह हरिद्वार के बाज़ार की एक दुकान से दो मूर्त्तियाँ उठाकर ले आई थी

और उनके पैसे उसने नहीं चुकाये थे। वह घबरा गई थी। जब सभी आपस में बातचीत करने में तल्लीन थे और ईश्वर को रक्षा करने के लिए पुकार रहे थे, तब उसने चुपके से अपनी झोली में से वे दो मूर्त्तियां निकाल कर उन्हें जल-प्रवाहित कर दिया। और, देखते-ही-देखते, नैया ठीक-ठाक अविरल गति से आगे बढ़ने लगी। सबके मुरझाये चेहरे खिल उठे और सबने मन ही मन उस प्रभु का शुक्रिया अदा किया।

तो इस प्रकार प्यारे बच्चो, सदा याद रखना कि झूठ कभी भी फलता नहीं। एक-न-एक दिन सबको पता चल ही जाता है। सत्य कभी छिपता नहीं और जो बच्चे सत्य का संग करते हैं, वे सदा उन्नति के शिखर पर आगे ही आगे बढ़ते जाते हैं। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि सत्य क्या हैं? कहते हैं न—'ईश्वर सत्य है' (God is Truth) और सत्य सदा अविनाशी होता है। इसलिए सदा उस सत्य प्रभु का संग करने से हमारे वचनों, हमारे कर्मों तथा हमारे व्यवहार में भी सत्यता आजाएगी और हम लोक प्रिय, प्रभु प्रिय बन जायेंगे। अच्छा, ओमशान्ति। □

तुम भी ले आओ अपना रावण

ब्र० कु० राज, मजलिस पार्क, दिल्ली

दशहरा मना रहे हैं हम,
मन से—जग से—सबसे;
रावण हटा रहे हैं हम।

मेरी मनस धरा पर का रावण भी,
औरों से न था कम तनिक भी;
लम्बा, चौड़ा और बड़ा,
देहाभिमान पर था खड़ा;
दश विकारों के सीस थे इस पर,
विराजमान गर्धभराज तिस पर;
भरा था खूब संघर्ष का बारूद,
व्यर्थ संकल्पों से मार्ग अवरुद्ध;
दिलाराम शिव ने उपाय बताया,
हिम्मत, उत्साह, बल बढ़ाया;
डायरेक्शन पर उसी के अब—
रावण को जब-तब!
आत्मस्थिति की तीली लगा रहे हैं हम
दशहरा मना रहे हैं हम

रावण मेरा एकाकी नहीं था—
अनुमान-संशय के परिवार सहित था—
आसुरी सैन्य दल-बल था इसके संग।
था पैर पटकता फड़कता अंग॥
शिव-राम, लक्ष्य-मन अब सन्मुख!
दृढ़ संकल्प से हो के उन्मुख!
ज्ञान बाण लगा रहे हैं हम।
दशहरा मना रहे हैं हम॥

तुम भी ले आओ अपना रावण!
तुरन्त जला लो सुख पाओ मनभावन!
है यही सीज़न दशहरे का,
अब न जलाया तो फिर कभी न जलेगा;
यही सन्देश सुना रहे हैं हम।
दशहरा मना रहे हैं हम॥

पवित्रता का करके इकरार,
जला के रावण इकबार;
हर वर्ष जलाने की—
रस्म मिटा रहे हैं हम।
दशहरा मना रहे हैं हम॥

न थी केवल इक, पूरा विश्व लंका है।
नारी इक नहीं, हर आत्मा सीता है॥
दस विकारों के हरने में—
सच्चा दशहरा निहित है।
इन्हें विजय करने में—
विजयादशमी अभिहित है॥
राज़ यही स्पष्ट करने को—
राम राज्य स्थापन करने को,
योगाग्नि से—
रावण जला रहे हैं हम
दशहरा मना रहे हैं हम

सचित्र समाचार

इलाहबाद में ब्र. कु. मनोरमा, स्वामी शान्तानन्द सरस्वती को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए।

बड़नगर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन सत्र न्यायाधीश शेरसिंह मन्सारे जी कर रहे हैं।

दिल्ली में भाता पीर ज़ामिन निजामी साहब को ब्र. कु. शील आत्मस्मृति का टीका देते हुए।

भूसावल में सर्व धर्म सम्मेलन में ब्र. कु. सुलभा तथा सर्व धर्म के वक्तागण रंगमंच पर बैठे हुए हैं।

हरिद्वार में साधु समाज के अध्यक्ष डा० श्याम सुन्दर दास को ब्र. कु. सरिता राखी बांधते हुए।

हरिद्वार में ब्र. कु. सरिता स्वामी प्रकाशानन्द जी को पावन राखी बांधते हुए।

वर्धा में "तनावमुक्त कैसे हों" इस विषय पर प्रवचन करती हुई ब्र. कु. शीलू बहन।

मिलिट्री अधिकारियों तथा पुलिस अधिकारियों को राखी बांधी गई

सिकन्दराबाद (आ० प्र०) में ब्र. कु. कलपना, सेना के भूतपूर्व प्रमुख भ्राता कृष्णाराव को उनके निवास स्थान पर राखी बांधते हुए।

मऊ में ब्र. कु. आशा, इन्फैंट्री स्कूल के कमांडेंट मेजर जनरल ए. के. चैटर्जी को पावन राखी बांधते हुए।

जालन्धर में ब्र. कु. कृष्णा, मेजर जनरल रणवीर सिंह जी को जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

श्यामनगर में ब्र. कु. उर्मिला, पश्चिमी बंगाल पुलिस ट्रेनिंग कालेज के डी. आई. जी. भ्राता पी. के. भट्टाचार्य को राखी बांधते हुए।

ज़बलपुर में ब्र. कु. कमल, मेजर जनरल एम. ई. ए. कृष्णन, जी. ओ. सी को राखी बांधते हुए।

रायपुर में ब्र. कु. निर्मला, डी. आई. जी. पुलिस भ्राता आर. एल. एस. यादव को पावन राखी बांधते हुए।

पुलिस के डायरेक्टर जनरल भ्राता हरिवल्लभ जोशी जी को सतना में ब्र. कु. निर्मला राखी बांधते हुए।

कैदियों तथा जेल अधिकारियों को रक्षाबन्धन

सिरसा जेल में ब्र० कु० स्वदश बाला कैदियों को राखी बांधते हुए तथा ब्र० कु० शीला तिलक देते हुए।

भारुच सब जेल में कैदियों को राखी बांधती हुई ब्र० कु० सुनिला। ब्र० कु० प्रभा साथ में है।

मेहसाना जेल के कैदियों तथा जेल अधीक्षक को राखी बांधती हुई ब्र० कु० ज्योतसना जी।

भिवानी जिला जेल में ब्र० कु० नारायणी कैदियों को राखी बांधने के पश्चात् जेल अधिकारी को राखी बांधते हुए।

भोपाल सन्ट्रल जेल में कार्यक्रम के पश्चात ब्र० कु० शैलम, सुरक्षा अधिकारी तथा अन्य।

बाड़मेर जिला जेल में ब्र० कु० भटनागर जी कैदियों से बुराइयां छोड़ने का बायदा कराते हुए।

सहारनपुर जिला जेल में कैदियों से श्रेष्ठ कर्म करने का बायदा लेने के पश्चात् ब्र० कु० प्रकाश इन्द्रा, भगवती जेलर तथा अन्य चित्र में खड़े हैं।

ऊटाकमंड की जेल में ब्र० कु० शिवकन्या कैदियों के समक्ष प्रवचन करते हुए, साथ में ब्र० कु० पुष्प इंदिरा जी तथा अन्य भाई-बहिन बैठे हैं।

छत्तरपुर जेल में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० बहिनें जेल अधिकारियों के साथ खड़े हैं।

जलगांव जेल के मुख्य जेलर भ्राता वाणी जी को ब्र० कु० मीनाक्षी राखी बांधते हुए।

उदयगीर में ब्र० कु० गीता सैशन जज को राखी बांधते हुए।

हरदोई जेल अधीक्षक भ्राता जे० एम० शुक्ला को ब्र० कु० सुमित्रा राखी बांधते हुए।

ब्रह्मपुर जेल के जेलर महोदय को ब्र० कु० नीलम पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

केन्द्रीय कारागार रायपुर में ब्र० कु० कमला एक कैदी भाई को राखी बांधते हुए।

रोपड़ की जेल में ब्र० कु० राज कुमारी कैदियों को ईश्वरीय संदेश देते हुए।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

ब्र० कु० देवदत्त, भावनगर

सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर, सुन्दरता अति प्यारी
शिव का ज्ञान समझने वालों से है ये माया हारी

सत्य :—सत्य अपने आप में एक शक्ति है, सत्य शाश्वत् है, एक रस है। सत्य सदा प्रमाणित है; सत्य के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। अत: किसी ने ठीक ही कहा है कि Truth fears no examination या Truth is ever green. सत्य सदा प्रमाणित है अथवा सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

सत्य एक प्रकार की तलवार है जो अनीति और अन्याय को काट डालती है। सत्य एकाकी होते हुए भी सशक्त है और अनेकानेक असत्यों के लिए कालरूप है। सत्यविहीन व्यक्ति वा वस्तु चाहे कितनी भी सुन्दर हो, सत्य के आगे उसी प्रकार तेजहीन हैं जैसे सूर्य के आगे तारे।

असत्य व कपटपूर्ण जीवन एक अभिशाप है, विकृत्त है, निन्दनीय है क्योंकि साररूप सत्य जहाँ नहीं वहाँ हर वस्तु सारहीन है। पापाचार के लिए सत्य यमरूप है। किसी कवि ने सत्य की महिमा में लिखा है :—

सत्य सृष्टि का सार, सत्य निर्बल का बल है,
सत्य सत्य है, अचल अटल है।
जिस पर इसका वार हुआ, आत्मा निर्बल की,
खा जाती है जंग छुरी, छाया छल की॥

और उसी कविता में अन्त में कवि ने परमात्मा को ही परम सत्य अथवा सर्वोपरि सत्य मानकर लिखा है,—"सत्यरूप हो नाथ, तुम्हारी शरण रहूंगा" इत्यादि।

सत्य के पीछे महात्मा गाँधी को गोली खानी पड़ी, सुकरात, मीराबाई तथा दयानन्द जी को जहर पीना पड़ा। ईशुमसीह को शूली पर लटकना पड़ा। मन्सूर को फाँसी स्वीकारनी पड़ी। गैलीलियो को घुटनों के बल चलने पर मजबूर किया गया। कहाँ तक गिनती को जाए, सत्य की महिमा का वर्णन एक दुश्कर कार्य है। कहते हैं कि सत्य कड़वा होता है। सत्यवादी व्यक्ति शाक्तिशाली और विश्वसनीय गिना जाता है।

शिवं और सुन्दरम्

सत्य का स्पष्टीकरण कुछ ऐसे ढंग से होना आवश्यक है जो "शिवम्" कल्याणकारी, लोकोपकारी, परोपकारी अथवा आनन्ददायी हो।

कई बार सत्य को विकृत्त रूप से चित्रित व वर्णित किया जाता है, इसलिए बहुधा लोग सत्य से सहमे हुए से रहते हैं। फिर भी जिसमें सत्य कहने व सुनने का साहस आ जाए, वही व्यक्ति "शिव्म" का पात्र भी हो सकता है।

"**शिव**" स्वभावत: ही कल्याणकारी, कर्मविपाक, पराप्रकृत्ति स्वयंभू तथा अजन्मा है। सर्व विद्याओं, गुणों और शक्तियों के भंडार हैं, सर्वसिद्धि दाता, भाग्यविधाता हैं, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ और त्रिनेत्री तथा सदैव एकरस हैं। सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं; वैसे ही सत्य के स्पष्टीकरण के लिए 'शिवम्' का समावेश सोने में सुगन्धि का काम देता है।

सत्य की विकृत्ति से संसार में कलह, क्लेश और ईर्षा-द्वेष बढ़ते हैं। विश्व नर्कमय बन जाता है। मानव तथा अन्य प्राणी संतप्त, रुगण तथा क्लेशों से दुखित हो जाते हैं और ऐसे समय विकृत सत्य अथवा 'अशिवम्' की नहीं अपितु 'शिवम्' की आवश्यकता होती है। ऐसे ही समय का सम्वल प्रकृति और प्रवृति को 'अशिवम्' से 'शिवम्' में परिवर्तित कर शक्ति का अविरल निर्झर प्रवाहित करके इस नारकीय दुनिया का महापरिर्वतन कर डालता है और यही 'सत्यम्' का 'सुन्दरम्' स्वरूप है।

जो कुरूप है, विकृत है, भयोत्पादक है, संहारक

है वह सत्य होते हुए भी सत्य नहीं सत्य का प्रतिबिम्ब मात्र है। विश्व के विविध सत्यों में एक सर्वोपरि सत्य है और वह परम सत्य ही 'शिवम्' अथवा 'शिव' है। किसी ने लिखा है—"Philosophy found out many truths but not the truth." अर्थात दर्शन ने अनेक सत्यों को खोजा किन्तु सत्य को नहीं।

यह परम सत्य वही 'शिवम्' अथवा 'शिव' हैं जिनके बारे में विश्व में विविध भ्रान्तियां, अटकलें, किंवदन्तियां, मान्यताएँ और कल्पनाएं इत्यादि हैं।

किसी ने 'परमात्मा शिव' को सर्वव्यापी कहा तो किसी ने आत्मा सो परमात्मा कहा। अन्य किसी ने परमात्मा को नाम-रूप से न्यारा माना तो किसी ने देवी-देवताओं को, संतों-महात्माओं को ही परमेश्वर का रूप मान लिया। पुनश्च किसी ने पुरुष (आत्मा), प्रकृति और परमात्मा को ही एक कर डाला अथवा "जीव और शिव" के खेल को अतिरंजित रूप में वर्णन कर डाला। इसी तरह परमात्मा के अवतरण के बारे में, मनुष्यात्माओं के जन्मों, सृष्टिचक्र तथा युगों की आयु निर्धारित करने में, कल्प तथा मानव के उत्थान और पतन, भूगोल और खगोल एवम् विज्ञान के नरीक्षणों, परीक्षणों से विविध सिद्धांत निधारित किए।

उपरोक्त तथ्यों, कथनों, किंवदन्तियों, मान्यताओं इत्यादि से कुछ बातें सत्य भी थीं, कुछ अर्द्ध सत्य और बहुत सी बिल्कुल ही असत्य भी।

अर्द्ध सत्यों से भ्रान्तियां बढ़ीं और समूचे असत्यों के कारण मिथ्याभिमान, चरित्र की विकृति और नास्तिकता इत्यादि दुर्गुणों का आधिक्य बढ़ा। इस प्रकार अद्ध सत्यों और समूचे असत्यों दोनों के कारण ही सत्यम् 'शिवम्' नहीं बन सका और 'शिवम्' न होने के कारण 'सुन्दरम्' भी नहीं बना। गीत की पंक्तियां पुनः इसी तथ्य को निर्दिष्टित करती हैं कि सर्व सत्यों में भी एक ही परम सत्य है,—"सत्य ही शिव है" पुनश्च—"शिव ही सुन्दर" दोनों का तारतम्य यही निकलता है कि जो कल्याणकारी है, वही 'सत्य' है। इस विचार से यह बात पुष्ट हो जाती है कि 'शिव परमात्मा' जो विश्व इतिहास या विश्व नाटक के सुत्राधार तथा तारनहार हैं वही "परमसत्य" हैं और उस द्वारा दिया गया ज्ञान भी परमसत्य है, वही हर तरह से मानवात्माओं के कल्याण करने में समर्थ होने के कारण 'सुन्दरम्' भी हैं।

सुन्दरता, रूप, गुण या कर्म किसी भी प्रकार की हो सकती है क्योंकि किसी ने लिखा है—

"नहीं रूप कछु रूप हैं, विद्या रूप विधान।
अधिक पूजनीय रूप ते, बिना रूप विद्वान।

यानि रूप की अपेक्षा ज्ञान अथवा विद्या महत्त्वपूर्ण है और विद्वान लोग रूपवान लोगों की अपेक्षा अधिक पूजनीय हैं। उपरोक्त तथ्य पर विचार करें तो भी यही सिद्ध होता है कि सर्व विद्याओं के अधिष्ठाता, गुण और कलाओं के ईश्वर परमात्मा 'शिव' हैं जिनमें तीनों कालों का, तीनों लोकों का ज्ञान, विश्व की सर्व आत्माओं के कल्याण का भाव समाया हुआ है। पुनश्च परमात्मा शिव स्वयं सब बातों से न्यारे होने के कारण और सदैव मनोमुग्धकारी होने के कारण ही सर्व को प्रिय हैं—भक्तों को भी तो ज्ञानियों को भी, आस्तिकों के भी और नास्तिकों के भी, योगियों के भी और वियोगियों के भी, स्त्रियों के भी तो पुरुषों के भी। विश्व के विविध धर्मों और नानाविध भाषाओं में उनकी यादगारें हैं और यही कारण है कि सर्व के 'विश्वसनीय' वन्दनीय अथवा पूजनीय होने के कारण ही वे "सुन्दर" भी हैं।

परमात्मा शिव के ज्ञान को जीवन में धारण करने तथा उनसे अपना बुद्धियोग जोड़ने से आत्माएं माया से मुक्ति पा जाती हैं। मुक्ति और जीवन-मुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर लेती हैं और इसके बदले में स्वयं परमात्मा शिव हमसे कुछ नहीं लेते। स्वयं परमात्मा 'शिव' कामारि हैं, विघ्न-विनाशक, पापकटेश्वर और महाकालेश्वर हैं। इन्हीं गुणों के कारण उन्हें 'शिव' और उनके दिव्य कर्त्तव्यों को 'शिवम् तथा सुन्दरम्' कहा गया है। जो लोग 'शिव' और शंकर' में भेद नहीं जानते वे लोग शिव के संहारक अथवा रौद्र रूप को ही सुन्दर मानते हैं और उस दृष्टि से राम के द्वारा रावण के संहार और कृष्ण के द्वारा कन्स, जरासिन्ध इत्यादि दैत्यों के मान मर्दन को भी 'शिवम् तथा सुन्दरम् मानकर उनकी वन्दना करते हैं। तो दूसरी तरफ 'शिव' का तपस्यामग्न और अढवरदानी होना भी 'सुन्दरम्'

शेष पृष्ठ १९ पर

राजयोग द्वारा विकर्म विनाश होते हैं–उसका सबूत

(ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि के प्रवचन के कुछ अंश)

याद में बहुत बड़ी शक्ति है। याद का अर्थ ही है शक्ति। योग को ही बल कहा गया है। याद से विकर्म विनाश हुए—इस बात को समझने से पहले हम सोचें कि विकर्म बने किस आधार से ? विकल्प से ही विकर्म बनते हैं। योग का अर्थ ही है मंसा में भी कोई विकल्प न हो। अगर बाप की याद के सिवाए दूसरा कोई भी संकल्प चलता, वृति जाती, तो यह भी देह अभिमान ही है, देहअभिमान सिद्ध करता कि अभी तक विकर्मों का खाता है। क्योंकि विकल्प उठना माना बाप की याद भूलना। अगर बाबा याद है तो हमारी मंसा पवित्र है। तो मंसा की पवित्रता के आधार पर ही अपने विकर्मों के खाते का पता चलता है।

हमारी बुद्धि में एक प्यारे बाप की याद है। हम आत्माओं का वह प्यारा बाप है, उसने हमें शक्तिशाली बनाया, उसका उदाहरण ब्रह्मा बाबा हमारे सामने हैं। मैं बाबा की हूँ, यह कहने तक नहीं परन्तु जैसे आत्मा के साथ यह देह है, ऐसे ही देह का भान भूलकर आत्मा बापदादा के साथ रहे। आत्मा जैसे बापदादा के साथ कम्बाइन्ड है। सर्व सम्बन्धों का प्यारा मीठा जूस "बापदादा" कहने से ही प्राप्त हो जाता। तब बापदादा मेरे साथ है तो विस्मृति हो नहीं सकती। निरन्तर जब बाप की याद में रहकर कर्म करते तो वृत्ति दूसरी बातों में जा नहीं सकती। संकल्प या देह अभिमान का वायब्रेशन उठ नहीं सकता; यही निशानी है विकर्म विनाश होने की। मैं आत्मा रीयल गोल्ड हूँ, सतोप्रधान हूँ। मेरा संकल्प सदा सर्व के लिए शुभ है। यही योग की सिद्धि है। अगर अशुभ संकल्प है माना योग नहीं है, देह अभिमान है।

योग का अर्थ ही है-मंसा संकल्पों को जीतो। योगी अर्थात् कर्मेन्द्रियां-जीत, कर्मबन्धन-जीत। संकल्प, विकल्प जीत। संकल्प है ही एक बाबा। उठो-बैठो-चलो, खाओ-पियो सदा उनकी छत्रछाया में। सदा कम्बाइन्ड। जब बुद्धि में बाबा है तो दूसरे संकल्प खत्म। और विकल्प खत्म माना ही विकर्मों का खाता समाप्त।

जब हमारे संकल्प पवित्र हो जाते तो पिछला जो खाता है वह खत्म हो जाता है। जब संकल्प और स्वभाव के खाते को ही खत्म कर देते तो विकर्म स्वत: खत्म हो जाते हैं। विकर्मों का खाता होगा तो मंसा ज़रूर बुरी भली होती रहेगी। अगर युद्ध चलता है तो यह निशानी है कि विकर्मों का खाता अभी तक है। युद्ध खत्म तो विकर्मों का खाता भी खत्म। तो अपने को देखो – युद्ध में हूँ या तख्तनशीन हूँ। मेरा हर संकल्प सफलता मूर्त है ?

(पृष्ठ १८ का शेष)

माना गया है। यहाँ 'शिव' जो वास्तव में शंकर का प्रयोग माना गया, त्याग और तपस्यामय तथा शीघ्र प्रसन्न होकर मनोवांछित वरदान देने के कारण 'सुन्दरम्' अथवा वन्दनीय माने गए हैं। पुनश्च राम के द्वारा शिव की स्तुति, कृष्ण के द्वारा शिव का आह्वान तथा 'शिव' के द्वारा राम नाम की महिमा और औमासुर की तरफ से युद्ध कर अन्त में स्वयं कृष्ण महिमा के दृष्टांत इस बात के प्रतीक हैं कि स्वयं श्री कृष्ण और श्री राम ने किसी समय 'परमात्मा शिव' से योग लगाकर जीवन को दिव्य बनाने का सत्य ज्ञान प्राप्त किया और स्वयं 'परमात्मा शिव' ने भी उनके त्यागी, तपस्वी और परोपकारी जीवन की महिमा करके उन्हें जन्म जन्मान्तरों के लिए सभी प्रकार की दिव्य शक्तियों से सम्पन्न कर दिया। आज पुन: वही शुभ घड़ी आ उपस्थित हुई है जबकि हरेक मानवात्मा 'शिव' से मिलन मनाकर, उनकी 'श्रीमत' को अपनाकर अपना ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार मुक्ति और जीवन-मुक्ति प्राप्त कर सकती है अत: किसी ने ठीक ही कहा है कि, सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर···

नम्रता

ब्र० कु० नीलम, गौहाटी

एक सन्त बहुत बूढ़े हो गए। देखा कि अन्तिम समय समीप आ गया है तो अपने सभी शिष्यों को अपने पास बुलाया। प्रत्येक से बोले—"तनिक मेरे मुंह के अन्दर तो देखो भाई, कितने दांत शेष हैं ?"

प्रत्येक शिष्य ने मुंह के भीतर देखा। प्रत्येक ने कहा—"दांत तो कई वर्ष पहले समाप्त हो चुके हैं महाराज, एक भी दांत नहीं है।"

सन्त ने कहा –"जिह्वा तो विद्यमान है ?"

सबने कहा—"जी हां।"

सन्त बोले—"यह बात कैसे हुई ? जिह्वा तो जन्म के समय विद्यमान थी, दाँत तो उसके बहुत पीछे आये ! पीछे आने वालों को पीछे जाना चाहिए था। ये दांत पहले कैसे चले गए ?"

शिष्यों ने कहा—"हम तो इसका कारण समझ नहीं पाए।"

तब सन्त ने अति गम्भीर तथा शान्त स्वर में कहा—"यही बतलाने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है। देखो, यह जिह्वा अब तक विद्यमान है तो इसलिए कि इसमें कठोरता नहीं और ये दांत पीछे आकर पहले समाप्त हो गए तो इसलिए कि ये बहुत कठोर थे। इन्हें अपनी कठोरता पर अभिमान था। यह कठोरता ही इनकी समाप्ति का कारण बनी। इसलिए मेरे बच्चो, यदि देर तक जीना चाहते हो तो नम्र बनो, कठोर न बनो।

शिवबाबा ने हम बच्चों को विश्व परिवर्तन का जो कार्य दिया है वह नम्रता के बिना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है। क्योंकि जब तक हमारे जीवन में नम्रता रूपी बेल नहीं लगती तब तक उसमें दिव्यगुणों के फूल भी नहीं खिलते हैं। नम्रता ही जीवन का सर्वश्रेष्ठ शृंगार है और इस शृंगार के बिना जीवन अधूरा है। नम्रता का अर्थ ही है लचीलापन। लचीलेपन में झुकने की कला भी होती है, तनने की शक्ति भी तथा शौर्य की पराकाष्ठा भी। किसी कवि ने नम्रता की परिभाषा इन शब्दों में व्यक्त की है :

झुकते वहीं हैं जिनमें जान होती है।
अकड़े रहना मुर्दे की पहचान होती है॥

नवरात्रि में शक्तियों की पूजा

ब्र० कु० रामलोचन, आबू

विजय दशमी से पहिले नवरात्रि में जो शक्तियों की पूजा होती है उसका भी कुछ अर्थ है। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन मांगते, सरस्वती विद्या की देवी है तो उससे बुद्धि का वरदान मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति मांगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति भी आन्तरिक चाहिए। क्योंकि विकार भी आन्तरिक दुर्बलता से उत्पन्न होते हैं। वास्तव में यह देवियां कौन थीं जिससे शक्ति, धन, बुद्धि आदि मांगते हैं। वास्तव में यह देवियां शिव की सन्तान थीं जो शिव शक्तियां अथवा ब्रह्मा-पुत्रियां कहलाती थीं। परमात्मा शिव को महाकाल भी कहते हैं। जैसे राजा जनक की बेटी जानकी, राजा द्रुपद की बेटी द्रोपदी कहलाती थी "वैसे ही महाकाल परमात्मा शिव की पुत्री को महाकाली कहा गया है"। इनके हाथ में अस्त्र-शस्त्र दिखाते हैं। तो क्या यह संहार करती थी। नहीं, मां कभी भी अपने बच्चों का संहार नहीं करेगी। मां ने ज्ञान खड्ग से अज्ञान के सर को काटा था। अथवा बलि ली थी। जिसका यादगार तलवार दिखाई है। तो दशहरे से पहले देवियों का पूजन रावण पर विजय पाने के लिए आध्यात्मिक शक्ति प्राप्ति किए होने का यादगार है।

अब पुनः परमात्मा शिव सर्व शक्तियों का वरदान दे रहे हैं। अब वे कहते हैं "बच्चो, मेरे से योगयुक्त हो शक्तियों को धारण कर इस रावण को समाप्त करो।

व्यर्थ को समर्थ कैसे बनायें

ब्र० कु० गंगा, ब्यावर

विश्व के इतिहास में वर्तमान घोर कलियुग का समय चल रहा है। इस समय मनुष्य का जीवन मशीनीकरण है। आज हर मनुष्य सहज रूप में कह देता है फुर्सत नहीं है। लेकिन संसार की वर्तमान स्थिति को देखकर यह जानना आवश्यक हो गया है कि व्यर्थ क्या है, समर्थ क्या है अर्थात् पाप क्या है, पुण्य क्या है। जैसे संसार में हर परिवार का जीवन Source of Income पर निर्भर है वैसे ही हर मनुष्य का भविष्य उसके श्रेष्ठ कर्म और निकृष्ट कर्म पर निर्भर है। चाहे तो मनुष्य अपना जीवन समर्थ बनाकर वर्तमान व भविष्य को सुनहरा व अपरम्पार सुखों से भरपूर बना सकता है या वह व्यर्थ का खाता इक्ट्ठा कर धर्मराज के दण्ड का भागी बन अपना भविष्य अन्धकारमय व वर्तमान अपरम्पार दुखों से युक्त अशांत व तनाव-भरा बना सकता है।

कहा भी गया है "मनुष्य, सृष्टि का शृंगार है और चरित्र, मनुष्य का शृंगार है"। सच्चरित्र वाला मनुष्य ही परिवार में, समाज में, देश में विदेश में सम्मान पाता है। आज हर मनुष्य की यही अभिलाषा है कि उसको हर जगह सम्मान मिले और सम्मान का सम्बन्ध हमारे स्वमान, श्रेष्ठ कर्म अर्थात् समर्थतता से है।

आज के युग में सबसे बड़ी परेशानी आती है कि व्यर्थ को समर्थ कैसे बनायें क्योंकि सब तरफ व्यर्थ-तता का ही बोलबाला है। कई समझते हैं कि हम कभी झूठ नहीं बोलते, चोरी नहीं करते, रिश्वत नहीं लेते तो हम व्यर्थ नहीं करते। बल्कि गरीबों की सहा-यता करते हैं, रोगियों की सेवा करते हैं या धर्म अर्थ दान पुण्य आदि करते हैं तो हम समर्थ ही करते हैं। लेकिन व्यर्थ और समर्थ का मापदण्ड क्या है, इसे तो आध्यात्मिक ज्ञान से ही जाना जा सकता है।

आध्यात्मिक ज्ञान के अनुसार मनुष्य पांच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) में से किसी भी विकार के वशीभूत होकर देहभान में आकर जो भी कर्म करता है वह व्यर्थ गिना जाता है।

न चाहते हुए भी मनुष्य कर्मेन्द्रियों के वशीभूत होकर, या ईर्ष्या द्वेष, स्वार्थ तथा आसक्ति भाव में या भयभीत होकर मानव जो भी कर्म करता है तो वह सब व्यर्थ के खाते में जाता है।

समर्थ क्या है ?

जब मनुष्य अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर आत्म-कल्याण एवं विश्व कल्याण की शुभ भावना से व अनासक्ति भाव से कर्म करता है तथा अपनी कर्मे-न्द्रियों को नियन्त्रण में रखकर, तन मन, धन, समय शक्ति, परमात्मा पर अपर्ण करके अन्य आत्माओं को पांच विकारों की जंजीरों से मुक्त करने हेतु ज्ञान-दान, गुणदान एवं योगदान देता है, तब वह समर्थ कहलाता है। जैसे हमारी आंखें देह देखती हैं या यह मेरा पुत्र है इस मेरे-पन के भाव से पुत्र से स्नेह और दूसरी आत्माओं से द्वेष करती तो यह व्यर्थ बन जाता है। और जब हमारी आंखें आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सभी आत्माएं परमात्मा की सन्तान हैं— यही सम-दृष्टि का भाव हमें समर्थ की पूंजी इकट्ठी करा देता है। अर्थात् मनुष्य के **मन के विचार** ही उसे व्यर्थ बनाते हैं। और विचारों का आधार आहार, विहार और व्यवहार पर निर्भर है। इसलिए हर मनुष्य को व्यर्थ से बचने के लिए अपने विचारों का शुद्धिकरण करना पड़ेगा और विचारों की शुद्धि के लिए आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग परम आवश्यक है।

अगर मनुष्य व्यर्थ से सदा के लिए बचना चाहता है तो एक ही मंत्र को अपने जीवन में सदा के लिए अपनाये :—

बुरा न देखो, बुरा न कहो, बुरा न सुनो और बुरा न सोचो। इसे लच्छमण-रेखा समझकर प्रत्येक मनुष्य अपनी दैनिक जीवनचर्या बना लें तो वह सदा के लिए अपने जीवन में व्यर्थ को समाप्त कर समय को समर्थ बनाकर स्वर्ग में जाने लायक बन सकता अर्थात् वर्तमान व भविष्य दोनों ही उज्जवलकर अपने जीवन के हर क्षण में आनन्द एवं सन्तोष की प्राप्ति कर सकता है। □

गुप्तदान की गुह्य गति

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू

कई समझते हैं कि हम तन मन धन को परमात्मा के कार्य में लगाते अर्थात् उसको देते हैं लेकिन परमात्मा तो स्वयं देने वाला दाता है, भला वो आत्माओं से क्या लेगा। दान देते समय अगर मन में संकल्प भी चलता है कि "मैंने इतना दिया" तो आधा भाग्य समाप्त होता है और उसका किसी के पास मुख से वर्णन करते तो उसका और भी आधा भाग्य खत्म होता है। चार भाग में से तीन भाग भाग्य तो ऐसे ही गँवाते हैं। अन्त में सिर्फ एक भाग भाग्य ही हमारे खाते पर जमा होता है। स्मरण रहे, कि दान देते समय यही संकल्प हो, ये धन मैं Godly Insurance Bank में insure कर रहा हूँ, जिसका फल मुझे पद्मगुणा भविष्य में प्राप्त होगा।

गुप्त दान कौन से हैं ?

(१) **शुभ भावना और कामनाओं का दान**—दूसरों को जब हम शुभ भावना और कामनाओं का दान करते हैं तो उसका केवल हमें ही पता होता है, दूसरों को नहीं। और उसका प्रभाव दूसरों पर तुरन्त पड़ता है। अतः हमें शुभ भावनाओं का दान देकर यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका दूसरों को पता चले।

(२) **दिव्य गुणों का दान**—अपने जीवन की उच्चतम धारणाओं से हम गुप्त रूप से दिव्य गुणों का दान कर सकते हैं। जितना हम वाचा से दसरों को नहीं सिखा सकते उससे कई गुणा अपने अनुभवी जीवन से प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। इस गुप्त दान से आत्माओं को अपनी पूर्ववत दिव्यता से देवता बनाने की बड़ी भारी सेवा कर सकते हैं।

(३) **हिम्मत का दान**—निराश आत्माओं के अंधेरे मन में हिम्मत के गुप्त दान से आशा का दीपक जगाकर सफलतामूर्त बना सकते हैं। हम अपने अनुभव सुनाकर दूसरों की हिम्मत बढ़ाते रहें। धन तो कोई भी दान कर सकता है, परन्तु हिम्मत दिलाना यह शक्तिशाली आत्माएँ ही कर सकतीं हैं। इससे बहुतों की आशीर्वाद प्राप्त होती है। यही सच्चा सहयोग है।

(४) **शुद्ध संकल्पों से विश्व सेवा में योगदान**—जब हम सर्वशक्तिवान शिव बाबा की याद प्रतिदिन ८ घंटा करते हैं तब सुख शान्ति पवित्रता की किरणें विश्व में फैलने लगती हैं। विश्व के दूषित वायुमंडल को अपने शुद्ध विचारों से स्वच्छ करना भी गुप्त दान है। वातावरण में फैले दूषित वाईब्रेशन्स भी मनुष्यों को अशान्त व बेचैन करते हैं। अतः जब हम शुद्ध संकल्प करते तो उसका प्रवाह सूक्ष्म रूप में बेचैन मनुष्यात्माओं तक पहुँचता है, जिससे उन्हें चैन मिलती है।

दे दान तो छुटे ग्रहण—जो आत्माएँ कलियुगी विकारी तन मन धन से परमात्मा पर बलिहार जाते हैं, उन्होंको परमात्मा माया के ग्रहण से मुक्त कर एकदम निर्मल, पवित्र एवं स्वच्छ आत्मा बनाते हैं। जो माया के ग्रहण से आत्मा पर काले दाग होते हैं, उन्हें भस्मीभूत करके बेदाग आत्मा बनाते हैं। ऐसे बेदाग आत्माएँ ही बेगमपुर के बादशाह अर्थात सतयुग में विश्व महाराजन महारानी बनते हैं।

गुप्त दान से लाभ—गुप्त दान करते समय सूक्ष्म अहमभाव न होने से, मैं-पन का त्याग स्वतः ही हो जाता है। गुप्त दान करने वालों का मान शान रूपी कच्चे फल की आशा नहीं रहती है, इसलिए उन्हें सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। गुप्त दान देते समय बुद्धि में एक शिव बाबा भोला भंडारी की ही याद समाई रहती है। गुप्तदान से समाने की शक्ति बढ़ती है और गंम्भीरता जैसा दिव्य गुण स्वतः ही धारण हो जाता है। गुप्त दान से अनासक्त-वृत्ति होने से इच्छा मात्रम् अविद्या बन जाते हैं। गुप्त दान से सभी के

प्रति समदृष्टि भाव रहता है जिससे ईर्ष्या, द्वेष, स्वभाव संस्कारों का टकराव समाप्त होता है। गुप्त तन और मन की सेवा के दान से बेहद विश्व सेवा पर सदा तत्पर रहते हैं जिससे हम बेहद के सेवाधारी बनते हैं। गुप्तदान से आन्तरिक खुशी, उमंग-उल्लास स्थायी रूप में रहने से ईश्वरीय सेवा जल्दी वृद्धि को पाती है। गुप्तदान से राजाई कुल के दातापन के राजाई संस्कार स्वतः ही धारण हो जाते हैं। गुप्तदान से हम वरदानी बनते हैं।

□

कर लो तुम उद्धार

—ब्र० कु० जोगिन्द्र, शालीमार, दिल्ली

काम-क्रोध-मद-लोभ- मोह सब दुख देने वाले विकार।
ऐ नवयुवको ! इन्हें त्यागकर, कर लो तुम उद्धार॥

काम महाशत्रु है—बात ये हम सभी ने है जानी
श्रीमत पर चलकर बन पावन, मतकर अपनी मनमानी
जिसने इस काम शत्रु को जीतने की है ठानी
वही भविष्य में बनेंगे, सतयुगी राजा-रानी
उन्हीं का करते द्वापर युग से, सभी भक्त सत्कार। काम-क्रोध···

दूसरा नम्बर क्रोध का है, जो है काम ही का भाई
इन दोनों ने मिलकर ही, कलियुग में उत्पात मचाई
इसको जीत कर पालो तुम, शिवबाबा की बधाई
ऐ नवयुवकों, इसे जीतकर कर दिखाओ कुछ चमत्कार। काम-क्रोध···

लोभ-मोह के जाल को तोड़ो, सत्य पिता से नाता जोड़ो
शिवबाबा की याद में रहकर, स्वर्ग की दौड़ी दौड़ो
संसार अब निस्सार हो गया, इससे ममत्व छोड़ो
शिवबाबा ने दिया ज्ञान जो, यही है उसका सार। काम-क्रोध···

अहंकार है भारी दुश्मन, इसकी कर ले तू पहचान
इससे हारना है चोटी पर पहुंच, फिसलने समान
जिसने इसको जीता है, उसने जीता सारा जहान
ऐ नवयुवको इसे जीतकर, बन जाओ तुम महान
यह माया का अन्तिम दाव है, फिर वह कर दे नमस्कार। काम-क्रोध···

रावण के १० सिर, ५ विकार नर में और ५ विकार नारी के प्रतीक हैं, इसे ज्ञान और योग की अग्नि से जला कर सच्चा दशहरा मनाइये।

सन्तुष्टता

ब्र० कु० राजेन्द्र कुमार, उज्जैन

सबसे विशेष गुण जो चेहरे से चमके वह है—"सन्तुष्टता"। सन्तुष्टता ही सबसे बड़ी विशेषता अथवा श्रेष्ठता है। इसी महान गुण का वर्णन **"सन्तोषी सदा सुखी"** एवं **"जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान"** कहकर किया जाता है। सन्तुष्टता स्वयं को सम्पन्न बनाने का साधन है। सदा सन्तुष्ट अर्थात निर्विघ्न ! सन्तुष्ट आत्मा ही प्रभप्रिय, लोकप्रिय और स्वयंप्रिय होती है। सन्तुष्ट आत्मा की परख इन तीनों ही बातों से की जा सकती है। सन्तुष्ट आत्मा ही वरदानी रूप में प्रसिद्ध होगी और सन्तुष्ट आत्मा ही अनेक आत्माओं का इष्ट (पूज्य) बन सकती है।

सन्तुष्टता के प्रकार:—

सन्तुष्टता दो प्रकार की होती है—(।) स्वयं से सन्तुष्ट (२) सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से सन्तुष्ट, इसमें चैतन्य आत्माएं और प्रकृति दोनों आ जाते हैं। अर्थात् सबसे पहले तो अपने आप से सन्तुष्टता चाहिये, उसके पश्चात् जो भी सम्बन्ध एवं सम्पर्क में आने वाली आत्माऐं एवं प्रकृति के साधन हैं, उनसे सन्तुष्टता। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे कर्म, बोल, व्यवहार एवं आचरण से स्वयं भी सन्तुष्ट और अन्य आत्माऐं भी सन्तुष्ट हों। स्वयं की सन्तुष्टता की स्थिति ही सम्पर्क और सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं को सन्तुष्टता एवं खुशी प्रदान करती है।

सन्तुष्टता की निशानी एवं प्राप्ति :—

हम सन्तुष्ट हैं या नहीं, यह स्वतः ही हमारे आचरण और व्यवहार से झलकता है। सन्तुष्टता एवं असन्तुष्टता लाख प्रयत्न करने पर भी छिपाई नहीं जा सकती। सन्तुष्टता की निशानी प्रयत्क्ष रूप में प्रसन्नता दिखाई देगी। इस प्रसन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष रूप में ऐसी आत्मा को सदा स्वतः ही सर्व से प्रशंसा की प्राप्ति होगी। विशेषता है—सन्तुष्टता, उसकी निशानी है—प्रसन्नता और उसका प्रत्यक्ष फल है—प्रशंसा। प्रशंसा को प्रसन्नता से ही प्राप्त कर सकते हैं और प्रसन्नता का आधार है—"सन्तुष्टता"।

सन्तुष्ट आत्मा सदैव यह अटेंशन (ध्यान) रखेगी कि कोई भी मुझसे असन्तुष्ट हो। क्योंकि असन्तुष्टता ही मतभेद, टकराव और तनाव उत्पन्न करती है। असन्तुष्ट व्यक्ति सदैव ही तनावग्रस्त रहता है।

असन्तुष्टता के कारण :—

असन्तुष्टता की उत्पत्ति के दो प्रमुख कारण हैं—(।) चलते-चलते पुरूषार्थी जीवन में जब समस्याएँ या परिस्थितियां आती हैं और उनका सामना नहीं कर पाने की दशा में यह सहज-मार्ग भी सहन-मार्ग अथवा मेहनत का मार्ग अनुभव होने लगता है। ऐसी स्थिति में मेहनत ज्यादा एवं प्राप्ति कम होने से असन्तुष्टता की उत्पत्ति होती है।

(२) नाम-मान-शान की प्राप्ति की भावना असन्तुष्टता को जन्म देती है। नाम-मान-शान की इच्छा वाला जब यह देखता है कि उसका नाम नहीं हो रहा है या उसे मान-शान नहीं मिल रहा है, तो उसके अन्दर "असन्तुष्टता" के बीज अंकुरित होने लगते हैं।

निवारण :—

उपरोक्त असन्तुष्टता के कारणों का निवारण हम इस प्रकार कर सकते हैं कि समस्यायें एवं परिस्थितयां तो ड्रामा अनुसार आनी ही हैं। समस्याएँ एवं परिस्थितियां ही हमारे आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। एक गीत की पक्तियां हैं—"कांटों पे चलकर मिलेंगे साये बहार के" अतः समस्याऐं एवं परिस्थितियों रूपी कांटों पर चल कर ही हमें स्वर्ग रूपी बहार की प्राप्ति होनी है। इसलिये असन्तुष्टता का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरी बात जब स्वयं भगवान ने हमें अपना बना लिया, फिर इससे बड़ी मान-शान की बात और क्या हो सकती है ? फिर हमें अल्पकाल की झूठी दैहिक मान-शान के पीछे क्यों "असन्तुष्टता की दलदल" में फंसना चाहिये। अल्पकाल की झूठी मान-शान तो और ही हानिकारक है !

सन्तुष्ट आत्माओं के बारे में शिवबाबा ने एक वाणी में कहा है—**"जो सन्तुष्ट मणियां हैं, वही बाप का श्रेष्ठ श्रृंगार हैं। जो सदा सन्तुष्ट रहते हैं, उन्हें सन्तुष्ट मणी कहा जाता है। सन्तुष्टता की झलक मस्तक से चमकत रहे, ऐसे ही साक्षात्मूर्त बनो।"**

अतः हमें सन्तुष्टता धारण कर अपने आपको सम्पन्न एवं बापदादा का श्रृंगार बनाना चाहिये एवं इच्छाओं से पार "इच्छा मात्रम् अविद्या" की स्थिति में स्थित रह कर "असन्तुष्टता" उत्पन्न करने वाली इच्छाओं का दमन कर देना चाहिये। □

श्रीगंगानगर में रक्षाबन्धन के अवसर पर जगदम्बा अन्ध विद्यालय में नेत्रहीनों को राखी बांधती हुए ब्र. कु. बहन।

कपूरथला की जिला जेल में ब्र. कु. गीता एवं ज्ञानी बहनें कैदियों को पवित्रता सूचक राखी या तिलक देते हुए।

कलकत्ता मूक-बधिर विद्यालय के छात्र-छात्राओं को पावन राखी बांधती हुई ब्र. कु. पूरवी बहन।

लखनऊ में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात् ब्र. कु. सती बहन ईश्वरीय संदेश देते हुए।

पटियाला में ब्र. कु. कमला प्रसिद्ध समाज सेवी भ्राता अमर सिंह कम्बोज को राखी बांधते हुए।

कृष्णा नगर-दिल्ली में ब्र. कु. पुष्पा बहन सेवादल डिप्टी कमिश्नर पुलिस को राखी बांधते हुए

←
रामबाग हास्पीटल में संजन डा० जे० के० पटेल जी को ब्र० कु० धन लक्ष्मी पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

कृष्णानगर (दिल्ली) में ब्र० कु० पुष्पा, नगर परिषद के सदस्य भ्राता सुक्खन लाल सूद जी को राखी बांधते हुए।
→

महबूब नगर (आ० प्र०) में रक्षा बंधन के अवसर पर चित्र में वांए से ब्र० कु० महादेवी, ब्र० कु० प्रेम, भ्राता तिरुमूर्ति जिला न्यायाधीश, भ्राता गोपाल रेड्डी, चेयर मैन जिला परिषद।
←

गोंदिया के एम० एल० ए० भ्राता हलधर मिश्रा को ब्र० कु० रेनू राखी बांधते हुए।

पोखरा (नेपाल) में ब्र० कु० लक्ष्मी जी प्रमुख न्यायाधीश को राखी बांधते हुए।
→

←
सीकर में रक्षा बंधन के अवसर पर कृष्णा कालेज की प्रिन्सीपल डा० लक्ष्मी शर्मा अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ में ब्र० कु० बहिनें व भाई बैठे हैं।

फरीदाबाद थर्मल पावर हाउस के चीफ इंजिनियर भ्राता ओ० एस० छाबड़ा 'राखी बंधवाने के बाद ब्र० कु० बहिन-भाइयों के साथ खड़े हैं।
←

→
देहरादून परेड ग्राउंड में प्रर्दशनी का उदघाटन करते हुए एम० एल० ए० भ्राता गुलाब सिंह जी।

अध्यात्मिक सेवा समाचार

बांदा में ब्र. कु. दुलारी सांसद प०रामनाथ दुबे को राखी बांधते हुए। ब्र. कु. सरिता व अन्य साथ में हैं।

अजमेर के पब्लिक रिलेशन आफीसर भ्राता देवी सिंह को राखी बांधती हुई ब्र सरोज।

कोल्हापुर में मेयर भ्राता बलीराम पोवार जी को श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करती हुई ब्र. कु. सुनन्दा।

हासपेट में मुहमद मोयिन अली, कमिश्नर म्युनिसिपल कमेटी को राखी बांधती ब्र. कु. शारदा।

इन्टरनेशनल रोटरी क्लब में सर्व को राखी बांधने के पश्चात् ब्र. कु. कुलदीप, मंजू उन के मध्य में विराजमान हैं।

सिन्दरी में ब्र. कु. सुषमा वी. एन. मिश्रा को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

बार्शी नगर पालिका के प्रशासक भ्राता इनामदार जी को ब्र. कु. महानंदा पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

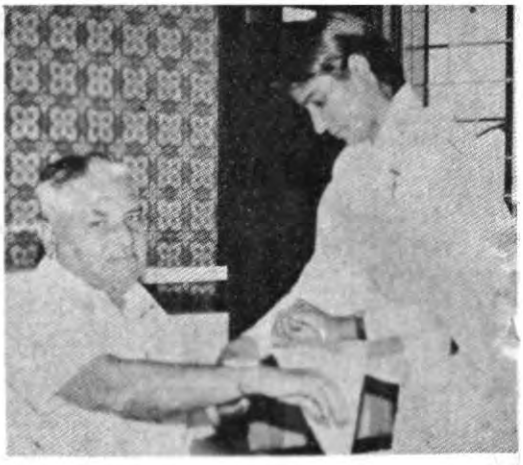

बुरहानपुर में ब्र. कु. सुधा, भ्राता शिव कुमार सिंह, एम. पी. को राखी बांधते हुए।

आबू रोड में रेलवे अधीक्षक भ्राता जी. जी मेहश्वरी को ब्र. कु. शशी पावन राखी बांधते हुए।

भंडारा में ब्र. कु. शकुन्तला डा० रमेश गिरडे को राखी बांधते हुए।

शाहबाद में ए. सी. सी. सिमेंट फैक्टरी के जनरल मैनेजर भ्राता बी. डी. इरानी को ब्र. कु. जगदेवी राखी बांधते हुए।

बेंगलौर में मेयर सुन्दर राज को ब्र. कु. सरला जी पावन राखी बांधते हुए।

अनन्तपुर में डा० डी. राजशेखर नायडू को ब्र. कु. वनिता पावन राखी बांधते हुए।

आबूरोड में ब्र. कु. शशी भ्राता सूरमाराम, विधायक को आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

महान-आत्माएँ

(ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुवन, आबू)

आबू की पर्वत शिखा से श्वेत वस्त्रधारिणी, बाल ब्रह्मचारिणी कन्याओं का एक विशाल समूह कतार में नीचे उतर रहा था। उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो ज्ञान-गंगा पतितों को पावन करने के लिए पुनः धरा पर अवतरित हो रही हो। नगर के अनेक स्थानों से दिखाई दे रहे इस दृश्य को अनेक लोग दत्त चित्त होकर देख रहे थे। माताएं अपने बच्चों को आवाज़ दे रही थीं, ओ पप्पू, जल्दी बाहर आकर देख। पप्पू उतावला सा भागा-भागा आया और दृश्य देखने में मग्न हो गया। कुछ ही क्षण बाद पप्पू ने जिज्ञासावश पूछा– कौन हैं ये, मां? बेटा ये ब्रह्माकुमारियां हैं—मां ने समझाया। तब ही पास खड़े व्यक्ति की आवाज़ सुनाई दी जो कि पूर्व दिन ही ब्रह्माकुमारी आश्रम देखकर आया था, कितनी महान हैं ये! जिन्होंने अपने सांसारिक सुख-भोग के समय ही पवित्रता की दीक्षा ले ली। इन्हें क्या मिल गया! किस ने इनके मन में त्याग तपस्या का मन्त्र फूंक दिया? किसकी शक्ति है ये...?

शायद इन्हें भी ज्ञात होता कि इन आत्माओं को स्वयं परमपिता ने विश्व-कल्याण के लिए चुन लिया है और इनके जीवन में ईश्वरीय रंग भर दिया है। जिन्हें ईश्वरीय सुख प्राप्त होने लगे उनके लिए राजाई का त्याग कर देना भी खेल तुल्य ही है। इन्हें तो भगवान मिल गये! तब ही तो इन्होंने धन-सम्पन्न घरों का, यौवन, सुखों का और साँसारिक प्राप्तियों का त्याग कर दिया।

महान आत्माओं के बल पर ही यह विश्व आधारित रहता है। ये महान पुरुष ही संसार की मार्ग-प्रदर्शना करते हैं और आदर्श उपस्थित करते हैं। यों तो संसार में सदा ही महान पुरुष जन्म लेते आये हैं जिन्होंने समय-समय पर अनेक कष्ट सहकर भी संसार में महान कर्त्तव्य किये। परन्तु वर्तमान समय ही सर्व युगों में महान प्रभु-मिलन का संगम युग है जबकि सबसे महान परमपिता ने असंख्य आत्माओं में महानता के बीज बोये हैं। एक परमात्मा के साथ अनेक महान पुरुष विश्व को महान बनाने के कर्त्तव्य में लग चुके हैं। यहां हम उनकी महानताओं का जिक्र करेंगे।

महान आत्माओं के संकल्प अति महान

महान आत्मा (महा+रथी) वही है जो अपने सत्य स्वरूप, आत्मिक स्वरूप में स्थित रहे। देह-भान से युक्त मनुष्य को महान पुरुष की संज्ञा नहीं दी जा सकती। क्योंकि आत्मिक स्वरूप ही अनेक महानताओं का बीज है। इस प्रकार आत्मिक स्वरूप में रहने वाली आत्मा के मन की शक्तियां बहुत बढ़ जाती हैं, और मन-शक्ति बलवान हो जाने से आत्मा अपने एक-एक संकल्प के महत्व को गहनता से समझने लगती है। इसलिए उसके मन से व्यर्थ का प्रवाह पूर्णतः समाप्त हो जाता है।

जो कार्य मनुष्य अन्य शक्तियों द्वारा नहीं कर सकते, वही कार्य आत्मिक स्वरूप में रहने वाली महान आत्मा अपनी संकल्प शक्ति द्वारा ही पूर्ण कर लेती है। वो महान आत्मा कैसी जिसका सतत सम्बन्ध सर्वशक्तिवान से न हो। सदा ईश्वरीय प्रकाश में रहने वाले महा पुरुष ही विश्व को प्रकाशित करते हैं।

किसी के भी विरोधक बाण, महान-आत्मा की मन की शान्ति को बेध नहीं सकते। उनकी साइलैन्स पावर उनकी शान्ति को अविचलित कर देती है। उन्हें चाहे कोई बुरा बोले, अपमान करे या लांछन लगाये, वे अपनी शान्ति को भंग नहीं होने देती। क्योंकि उन्हें विश्व को शान्ति का प्रवाह देना है। अतः वे ऊंची स्थिति में स्थित हुई आत्माएं, दूसरों के कटुवचन रूपी प्रहारों को अपनी शान्ति की किरणों

द्वारा दूर से ही भस्म कर देती हैं। जैसे विज्ञान द्वारा आविष्कृत लैसर किरणों से सभी प्रकार के विनाशक बम दूर से ही निष्क्रिय हो जाते हैं, वैसे ही महान-आत्माओं की शक्तिशाली शान्ति की किरणों के समक्ष दूसरों के विभिन्न प्रकार के व्यर्थ और विकार सहज ही भस्म हो जाते हैं।

महान आत्माओं के बेहद के संकल्प

उनके संकल्प सदा बेहद दृष्टि कोण लिये होते हैं अतः वे छोटी-छोटी बातों में विचलित नहीं होते। उनके मन में दूसरों के प्रति पुत्रवत् भावना रहती है। अतः दसरों का कैसा भी व्यवहार उनके पास आते ही शुभ-भावना में बदल जाता है। जैसे एक पिता का अपने अयोग्य बच्चे के लिए भी शुभ-भावना व स्नेह रहता है, वैसे ही महान आत्माएं भी सदा अपनी श्रेष्ठ भावनाओं से सभी को सहयोग देती रहती हैं। उनकी शुभ-भावना में असीम शक्ति होती है, तभी तो लोग उनसे आशीर्वाद मांगने जाते हैं। क्योंकि उनमें पवित्रता व योग का अलौकिक बल होता है। इसलिए उनकी शुभ-भावना का प्रभाव दूसरों पर तीव्रता से पड़ता है और दूसरे मनुष्य स्वयं को बदलने का बल अनुभव करते हैं।

महान आत्माओं के संकल्प सदा विश्व-कल्याण के होते हैं। उनका तन, मन, धन सब दूसरों के सुख के लिए होता है। वे अपने लिए कुछ भी संग्रह नहीं करते। वे कष्ट सहकर भी दूसरों के सुखों का ध्यान रखते हैं। परन्तु इसके बदले में उन्हें मान या महिमा की कामना नहीं रहती। वे पूर्ण अनासक्त होकर दूसरों की मदद करते हैं। इसलिए कोई भी कर्म उनके लिए बन्धन नहीं बनता।

इस प्रकार उनके ऊँचे विचार, ऊंचा दृष्टि कोण उनकी उच्चता का आधार है। हद का दृष्टिकोण ही किसी की भी परेशानी का मूल कारण होता है। अपने-पन का भान ही मनुष्य को परेशान करता है। और महान पुरुष इन सबसे परे होते हैं।

वरदानी बोल महान आत्माओं के मुख की शोभा है

"हर बोल सुखदाई हो", "हर वचन वरदानी हो"—ये ईश्वरीय बोल उनके जीवन में समा चुके होते हैं। पत्थर-वचन, दिल तोड़क वचन अहं-युक्त वचन, उनकी जिह्वा से उच्चारित नहीं हो सकते। उनके वचन तो ऐसे होते हैं, मानो सुनने वालों पर वरदानों की वर्षा हो रही हो। सुनने वाले सदा उनकी अमृत वाणी सुनने के इच्छुक रहते हैं। वे चाहते हैं कि इन महान आत्माओं के मुख से हमारे लिए कुछ सत्य सिद्ध होने वाले महावाक्य निकलें तो हम धन्य-धन्य हो जाएं।

क्योंकि उनके मन में ईर्ष्या की व बदले की अग्नि बुझ चुकी होती है, अतः उनके बोल दूसरों की उमंग बढ़ाने वाले होते हैं। दूसरों को आगे बढ़ाना और उन्हें आगे बढ़ते देख प्रसन्न होना, महान आत्माओं की महान वृत्ति होती है।

मुख पर पूर्ण नियन्त्रण ही उन्हें दूसरों के दिल में स्थान दिला देता है। वे कभी उतावलेपन से या अधैर्यवत् व्यवहार नहीं करते और दूसरों की अधैर्य-वत् वाणी को भी धैर्य से सुनकर समा लेते हैं। इस प्रकार उनका चित्त सागर समान सब कुछ समाये हुए रहता है और सब कुछ समाकर वे उससे अप्रभावित और पूर्ण प्रसन्न रहते हैं।

त्याग और सादगी उनका शृंगार है

सद्गुणों से शृंगारित आत्मा को बाह्य सजावट की आवश्यकता नहीं होती। बाह्य शृंगार उसे कूड़ेदान को सजाने जैसा ही लगता है। उनका त्याग और सादगी ही उन्हें योग-युक्त बनाने में और विश्व सेवा में आधार होती है। दूसरे मनुष्य भी उनकी त्याग, तप व सादगी की ओर ही झुकते हैं न कि वैभवों की ओर। उनकी दिव्यता लिए हुए सादगी ही मनुष्य को आधुनिक फैशन व व्यसनों की निस्सारता समझा देती है।

उनका झुकाव संसार की किसी भी चमक-दमक या प्राप्तियों की ओर नहीं होता। महान आत्माएं कहीं भी झुकती नहीं। उन्होंने तो माया को भी झुका लिया होता है। भगवान भी उन्हें अपनी रचना का नूर समझते हैं। इस प्रकार पवित्रता के शृंगार से सजी हुई महान आत्माएं सम्पूर्ण विश्व को एक परमात्मा की ओर आकर्षित कर देती हैं।

कर्मों में न्यारापन महानात्माओं की अलौकिकता है

सम्पूर्ण योग-युक्त स्थिति में स्थित हुई महान-आत्मा अपने अनासक्त कर्म-योग के द्वारा कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करती है। कर्म उन्हें बांधते नहीं। विकर्मों से तो वे कब की मुक्त हो चुकी होती हैं। परन्तु दूसरों के उत्थान के श्रेष्ठ कर्म भी वे पूर्ण-अनासक्त वृत्ति द्वारा करती हैं। उन्हें कर्म करते हुए देखकर ऐसा लगता है कि मानो वे यहां नहीं हैं और तब ही उनके कर्मों की छाप दूसरों पर पड़ती है। वे हर कर्म विश्व को दृष्टि में रखकर करती हैं। उनके कर्म हर कठिनाई में सरलता का मार्ग दिखाते हैं और मनुष्य को कर्महीनता से मुक्त करते हैं।

महान आत्माएं महिमा-योग्य परन्तु दिखावे से दूर होती हैं

उनका हर कदम महिमा योग्य होता है। परन्तु वे अपनी महिमा स्वयं नहीं करतीं। स्वयं अपने कृत्यों की महिमा करना तो हेय है। दूसरे लोग सदा ही उन पर महिमा के पुष्प चढ़ाते हैं। जिसे सुन सुन कर वे अधिक नम्र बनती हैं। उनमें दिखावे जैसा हीन भाव नहीं होता। गुप्त-पुरुषार्थ, गुप्त दान, गुप्त सहयोग और अनेक रहस्यों को स्वयं में समाकर वे सदा गम्भीर रहती हैं। और न ही कभी बुद्धि का अभिमान, उनकी दिव्यता में कालिमा लगाता है। वे पूर्ण बुद्धिमान होते हुए भी दूसरों की बुद्धि को सम्मान देते हुए सदा शान्त बने रहते हैं। वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रदर्शन भी नहीं करते और वर्णन भी नहीं। इस प्रकार महान आत्मा सदा शान्ति के गहन अनुभवों में खोये, उपराम बने रहते हैं।

महान पुरुषों के पास व्यर्थ नहीं होता वे अडोल व अविचलित भाव से केवल अपने लक्ष्य को देखते हैं। उस सर्वोच्च लक्ष्य को पाना और दूसरों को प्राप्त कराना—ये ही उनका जीवन ध्येय होता है। मार्ग की चट्टानें उनकी रफ्तार में वृद्धि कर देती हैं। विघ्न उनकी उमंगों को ताजा कर देते हैं। वे किसी की भी बातें सुनकर रुकते नहीं। इस प्रकार महान आत्माओं का सम्पूर्ण बल सदा केन्द्रित रहता है, बिखरा हुआ नहीं।

सारतः, क्षमाशील बनी हुई आत्माएं अपने चित्त की शीतलता द्वारा अनेक आत्माओं को एकता के सूत्र में बांधे रखती हैं। और अपनी स्थिति को महान बनाकर दूसरों की स्थिति को बनाने की सेवा में सदा संलग्न रहती हैं।

—०—

गीत

(युवकों के लिए)

(ब्र० कु० मोहन, अमृतसर)

आज का युवक कल का देवता
सत मार्ग दर्शायेगा
प्रेम शीतलता शुद्ध कर्म से
जग की ज्योति जगायेगा

(१) उस विचित्र शिव का होगा
चित्र इनकी सूरत में
सतयुगी चरित्र होगा
एक एक की मूर्त्त में
हर चेहरा मुस्कान भरा
शिव का दर्शन करायेगा
आज का युवक.....

(२) नींव है यह नये युग की
दीपक यही आशाओं के
झगड़े यह मिटायेंगे
अनेक धर्म भाषाओं के
रूढ़ीवाद का रूप बदलके
रूहों का रूप सजायेगा
आज का युवक कल का देवता.....

"तुम्हारी कमजोरियां ही तुम्हारे लिए विघ्न हैं।"

(ब्र० कु० अंजू मुजफ्फरपुर)

प्रिय साथियो,

परमात्मा ने हमें इतनी ऊँची और इतनी श्रेष्ठ मंजिल दिखायी कि जिसपर चलने की कल्पना मात्र आम आदमी नहीं कर सकता। इसलिए कोटों में कोऊ का ही गायन है। फिर भी जिन्होंने हिम्मत की है, **एक बल एक भरोसा** रखकर चल पड़े हैं, वे ही पदमापद्म भाग्यशाली हैं। मंजिल तो श्रेष्ठ है, लेकिन मार्ग में अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक इत्यादि। इन्हें हम आध्यात्मिक भाषा में माया की आधियाँ कहते हैं। इनमें एक प्रकार के विघ्न ऐसे हैं जो राही के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न कर देते हैं जैसे कि शायद इस मार्ग पर चलने से मैं समाज से तिरस्कृत हो जाऊँगा। पारिवारिक सम्बन्धी एवं समाज वाले उसे देखकर तरह तरह के उदाहरण देकर रोकने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसका वास्तविक अर्थ क्या है? क्या हम औरों को ही दोष देते रहें? क्या औरों के भरोसे भाग्य गँवा दें? अपार शक्ति के स्त्रोत सागर, नदियाँ या आंधियों को कोई किसी दिशा में बहने से रोक सकता है? क्या ये किसी की बातें सुनकर रूक जायेंगी? नहीं, तो फिर युवाशक्ति जिसके पास नयी उंमग और नयी तरंग है, शक्ति के नये स्त्रोत हैं, फिर कोई इन्हें क्यों रोके? अतः हमें इस बात पर केवल यह नहीं सोचना है कि ये लोग मेरे दुश्मन हैं, क्यों कि **परचिन्तन पतन की जड़** है। अतः इनमें काफी हदतक हमारी कमजोरियाँ ही जिम्मेवार है। वरना जिसे आपकी दृढ़ता, निश्चय, सही मार्ग एवं सही निर्देशक का ज्ञान हो जाए, वो भला आपका मार्ग क्यों रोकेगा? वो तो आपका सहयोगी बन सहयोग ही देगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि कौन-कौन-सी कमजोरियाँ हैं हमारे अन्दर। जरा देखें निम्नलिखित में से कौन-कौन-सी और कितनी मात्रा में है—

1. **पुरानी दुनिया से वैराग में कमी**: इतनी ऊँची मंजिल पर चल तो रहे हैं लेकिन उल्टे! मुंह पुरानी दुनिया की तरफ अब भी कभी-कभी घूमता रहता है। साईकिल पर बैठा व्यक्ति मुंह पीछे की ओर रखे या घोड़े पर सवार व्यक्ति घोड़े को चलता छोड़ पुनः अपने मार्ग की ओर दौड़ जाए, तो क्या होगा? दुर्घटना नहीं होगी क्या? ऐसे में अन्य चलने वालों का फर्ज नहीं है क्या कि आपको रोकें? तो क्या हुआ। जाना था कहाँ, चले गए कहाँ। तो यहाँ भी जबकि एक ओर पुरानी दुनिया के क्षणिक सुख भी सदा के लिए बुझने के लिए रुक रुककर प्रकाश दे रहे हैं। हमें नयी दुनिया के मालिक बनने के लिए इस दुनिया से वैराग होना चाहिए। दुनिया के किसी भी आर्कषण या व्यक्ति के पीछे हमारा लगाव है, तो हम अपने मार्ग से कभी भी पीछे हट सकते हैं, कभी भी माया से हार खा सकते हैं। अतः हमारी मंजिल इतनी ऊँची है, सदा काल के लिए सुख, शान्ति, वैभव देने वाली है तो इस पुरानी दुनिया जो कि कब्र दाखिल है, इससे वैराग आना चाहिए! वरन् दुनिया वालों को, विशेषकर परिवार व समाज वालों को आप पर विश्वास न होगा, शायद कभी भी अपनी राह से हट सकता है। अतः वो तरह तरह के तरीके अपना कर रोकते हैं।

(2) **त्यागवृति की कमी**:—परमात्मा ने हमें सिर्फ धुम्रपान, सिनेमा, उपन्यास, आदि का त्याग ही नहीं सिखाया, बल्कि मान, शान, स्तुति तथा स्वयं किसी की सेवा ही करें, सेवा ले नहीं—ऐसा बनना सिखाया है। जो चीजें छोड़ना इस श्रेष्ठ मार्ग

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

इलाहबाद मंडल के आयुक्त भ्राता स्वर्णदास बागला ब्र. कु. बहिन से राखी बधवाते हुए।

दार्जिलिंग में ब्र. कु. स्वर्दशन, भ्राता चंपक चटर्जी डिप्टी कमिश्नर को राखी बांधते हुए।

अमृतसर में ब्र. कु. आदर्श, डिप्टी कमिश्नर भ्राता गुरुदेव सिंह को पवित्र राखी बांधते हुए।

हनुमान गढ़ में एस. डी. एम. भ्राता अमीलाल चौधरी तथा उनकी युगल राखी बंधवाने के बाद ब्र. कु. भाई-बहिनों के साथ खड़े हैं।

ब्रह्माकुमारी राज जालन्धर के कमिश्नर भ्राता ए. सी. सेन को राखी बांधते हुए।

होशियारपुर में ब्र. कु. रमेश, भ्राता जनक राज कुण्डल अतिरिक्त जिलाधीश को पावन राखी बांधते हुए।

मेहसाना के कलैक्टर भ्राता मिश्रा जी को ब्र. कु. सरला आत्मस्मृति का तिलक देते हुए।

जिला अधिकारियों को रक्षा बन्धन

जोधपुर के जिलाधीश भ्राता एस० डी० श्रीवास्तव जी को ब्र० कु० रत्नमोहिनी जी पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।
←

→
ब्यावर के एस० डी० एम० भ्राता माणक चन्द जैन को राखी बांधती हुई ब्र० कु० राधा बहन।

कुल्लु में डिप्टी कमिश्नर भ्राता योगराज महाजन को ब्र० कु० कृष्णा राखी बांधते हुए।
←

बाड़मेर के कलैक्टर भ्राता सी० के० मैथ्यु को ब्र० कु० अमृत राखी बांधते हुए।

मण्डी में ब्र० कु० शील, जिलाधीश एस० विजय कुमार को राखी बांधते हुए, ब्र० कु० पदमा तिलक देते हुए।
←

→
रोहतक के डिप्टी कमिशनर भ्राता प्रदीप कुमार जी को राखी बांधती हुई ब्र० कु० आभा जी।

देगलूर (बिदर) के मैजिस्ट्रेट सेवा केन्द्र पर राखी बन्धवाने के पशचात् ब्र० कु० संतोष तथा प्रतिमा के साथ खड़े हैं।
←

→
कल्याण (बम्बई) में ब्र० कु० लता डिप्टी कमिश्नर पुलिस भ्राता अजीज खां को राखी बांधते हुए।

झांसी के डी० एम० भ्राता राधेश्याम कोशिक को राखी बांधती हुई ब्र० कु० शीला जी।

जबलपुर संभाग के आयुक्त भ्राता आर० एन वैद्य को राखी बांधती हुई ब्र० कु० सरोज।

ढेंकानल के डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस० आर० मोहपात्र को ब्र० कु० रेनु पावन राखी बांधते हुए।
→

←
तिनसुकिया में ब्र० कु० रजनी डिप्टी कमिश्नर भ्राता प्रदीप सिंह को पवित्रता सूचक राखी बांधते हुए।

बांदा जिलाधिकारी भ्राता डी० डी० लाल को राखी बांधते हुए ब्र० कु० सरिता बहन।
←

रुड़की में एस० डी० एम० भ्राता जे० एन चेम्बर जी को राखी बांधती हुई ब्र० कु० बिमला जी।
→

भैरहवा (नेपाल) में रुपन्देही जिला के प्रमुख जिला न्यायाधीश भ्राता राजेन्द्र कुमार भण्डारी जी को राखी बांधती हुई ब्र० कु० परनीता जी।
←

कपुरथला में डिप्टी कमिश्नर भ्राता वी० एन० ओझा को राखी बांधते हुए ब्र० कु० ज्ञानी जी।
→

←
बीजापुर में डिप्टी कमिश्नर भ्राता जे० एन० चौबे को राखी बांधती हुई ब्र० कु० सरोजा जी।

मैसूर में ब्र. कु. शारदा, डिप्टी कमिश्नर विशेष भ्राता शिवराम जी को पावन राखी बांधते हुए।

←
चन्द्रपुर जिला अधिकारी भ्राता देवस्थले जी को ब्र. कु. कुसुम राखी बांधते हुए।

जलगांव में ब्र० कु० मीनाक्षी, लोकप्रिय जिलाधिकारी भ्राता भास्कर राव पाटील को पावन राखी बांधते हुए।
→

←
कर्वी में ब्र. कु. विद्या एस. डी. एम. को राखी बांधते हुए।

रोपड़ के डिप्टी कमिश्नर भ्राता मलकियत सिंह कैलैको जी को ब्र. कु० राज बहिन पावन राखी बांधते हुए।

←
ऊना के डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस. पद्मासन को ब्र. कु. निर्मला पावन राखी बांधते हुए।

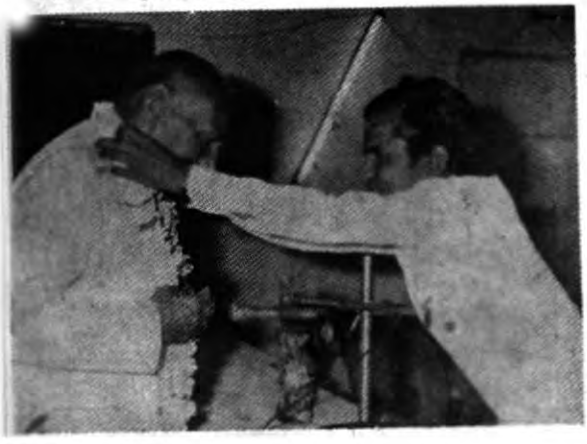

भिवानी जिले के उपायुक्त भ्राता धर्मवीर को ब्र० कु० नारायणी राखी बांध रही हैं।
→

←
पाली में ब्र. कु. नरेन्द्र जी चीफ आफीसर भ्राता मोहन लाल जी गुप्ता का राखी के अवसर पर स्वागत करते हुए।

(पृष्ठ ३२ का शेष) **तुम्हारी कमजोरियां ही तुम्हारे लिये विघ्न हैं**

में कोई विशेष बात नहीं है, लेकिन जैसा डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा है—घर-बार, खान-पान, सम्बन्धी तो सभी छोड़ सकते हैं, लेकिन मान शान की आशा तो बड़े-बड़े ऋषि-महात्माओं को भी लगी रहती है। तो हम हैं राजऋषि, एवं श्रेष्ठ ऋषि। अतः स्वमान में रहना चाहिए। ये महानता ही हमारे प्रति सर्व को नमन कराने वाली है। मान देना ही लेना है। इसका त्याग ही आगे २१ जन्मों के लिए मान बढ़ाएगा। अतः मान शान की भूखी आत्मा किसी को यह विश्वास नहीं दिला सकती कि हम कहाँ जा रहे हैं, हमारा गाईड कौन है। नम्रता के आगे सभी झुकेंगे। लता नम्र अर्थात् झुकी होने से लोग उसके फल झुककर ही तोड़ते हैं। घमंड में खड़े वृक्ष से तो चढ़कर या पत्थर मारकर फल तोड़ा जा सकता है।

3. **दृढ़ता की कमी** :—किसी भी प्रकार से अगर स्वयं में भी "दृढ़ता" की कमी है तो, हमारी रूहानी राह जहाँ माया की आंधियों के तले झोंके चलते हैं वहाँ से हम गिर सकते हैं। दुनिया के लोगों से हमारा कल्प-कल्प का सम्बन्ध है। अतः वो भले ही ये मान लें कि ये राह ऊँची है, श्रेष्ठ है, लेकिन हमारी दृढ़ता में कमी आने पर वो भी हमें इस योग्य नहीं समझते। अतः वो रोकते हैं। दृढ़ता अंगद के समान होनी चाहिए।

4. **निश्चय की कमी** :—कोई भी कार्य करते समय, चाहे वो स्वयं की सेवा भाव से हो या दूसरों की लेकिन कदम-कदम पर ये भाव मन में उठते हैं—पता नहीं ऐसा करने से ठीक होगा या ऐसा देखा जाए ठीक होगा या नहीं, या अब क्या होगा? कैसे होगा? ये बोल साधारण नहीं लेकिन हमारे परम-शिक्षक (Supreme Teacher) और ज्ञान (Knowledge) के प्रति निश्चय की कमी है। बाबा ने ड्रामा का राज समझाया है— ड्रामा हूबहू रिपीट होता है। एक सेकेन्ड का भी हेर फेर नहीं। तो क्या होगा? कैसे होगा? का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए; जो कल्प पहले हुआ, वही अब होगा। बाबा की छत्रछाया में बैठे हैं तो फिर जो होगा कल्याणकारी होगा। लेकिन ऐसा भूलकर जब हम अनिश्चय का भाव प्रकट करते हैं तो अन्य यह कह देते हैं कि छोड़ो, तुमसे नहीं होगा, तुम नहीं चल सकोगे।

5. **आत्म विश्वास की कमी** :—आखिर मैं कितना कर सकता हूं, इतना तो किया ही है, मैं और सहन नहीं कर सकता, ये कार्य कठिन है, मैं नहीं कर सकता, ये तरीका मैं नहीं जानता—ये बोल हैं आत्म-विश्वास की कमी के! हनुमान में आत्म-विश्वास जगाया तो वो उड़कर-लंका गया। बाबा ने हममें भी आत्म-विश्वास जगाया कि तुम सहन करने से ही शहनशाह बनोगे। कल्प-कल्प के विजयी हो, कठिन को सरल करने वाले, नालेजफुल हो। तो क्या बाबा में निश्चय नहीं या स्वयं को बाबा के सपूत बच्चे समझने में निश्चय नहीं? ये कमजोरी जैसे कि ताज तख्त, होते हुए भी राजा मूर्छित पड़ा है। अतः ये अवस्था भी दूसरों के कुछ कहने का कारण है।

6. **फालो-फादर की कमी** :—साकार बाबा में जो भी विशेषताएं थीं, उन्हीं का असर था कि कोई कैसे भी भाव-स्वभाव वाला उनके नजदीक आता, बदल जाता, स्वयं को खुश, तृप्त महसूस करता। उसका जीवन ही जैसे बदल जाता। देवत्वपन की झलक मिलती थी। लेकिन हमसे कोई ऐसे प्रभावित नहीं होता, मानों (Fallow father) में कमी। सदैव हर्षित मुख रहना, आवेश में न आना, निन्दक के लिए भी मित्रता का भाव, ये बाबा की विशेषता थी। हममें इनकी कमी होने कारण ही लोग हमें महान नहीं समझते। अतः वे सोचते हैं कि कुएँ में से निकलकर खाई में क्यों गिर रहा है। अतः वे रोकते हैं।

7. **निर्भयता में कमी** :—प्राप्ति भले ही कितनी श्रेष्ठ हो, भले ही चलने वालों में लगन हो, लेकिन यह लगन अगर अग्नि के रूप में न होगी तो राह के विघ्नों को नष्ट नहीं कर सकोगे। फिर राही को अनेक भय सताएगें। होगा कि नहीं, ठीक होगा, या नहीं, न जाने क्या होगा, अब क्या होगा? आदि आदि बोल मन में उभरेंगे? फिर कौन चाहेगा कि हमारे समाज के किसी व्यक्ति की यह हालत हो। अतः ये भय कभी मूर्छित न कर दे, इसके लिए भी वे रोकते हैं कि ऐसी राह पर चलो ही नहीं। □

रामायण

—ब्र० कु० रामकुंवर सिंह
प्रशासन अधिकारी, चन्द्रपूर

आज राम-कथा अर्थात् रामायण इतनी लोकप्रिय है कि लोग नाटक रूप में देखते, सुनते हैं। लेकिन वास्तव में राम त्रेतायुग के राजा न होकर जगत के रचयिता राम (परमात्मा) से सम्बन्धित हैं। त्रेता में न कोई दुःख था, न कोई राक्षस था। तब सीता को हरने और राक्षसों को मारने का सवाल ही कहां पैदा होता है।

यह विश्व ही समुद्र के बीच है और रावण रूपी माया पर आत्माएं जो बन्दर समान बन गई हैं, ने विजय पानी है। दशानन (दशमुख) अर्थात् रावण माया का प्रतीक है। रावण नाम का कोई राजा लंका में या कहीं भी नहीं था, इतिहास इसका साक्षी है। लंका वाले आज भी कहते हैं कि उनके यहां कभी कोई रावण नाम का राजा हुआ ही नहीं। दशमुख यानी पांच विकार पुरुष के तथा पांच विकार स्त्री के। रावण अर्थात् रुलाने वाला, राम अर्थात (रमणीक) खुशी देने वाला। रावण (माया) बहुत ही बली है।

रामायण में लिख दिया है कि जनकजी ने सूखा पड़ने से अपने हाथ से हल चलाया और हल चलाने से खेत में से सीताजी निकलीं। इसका अर्थ यह है कि बुद्धि रूपी क्षेत्र में ज्ञान रूपी हल चलता है, आत्मा रूपी सीता पैदा (मरजीवा जन्म) होती है, तब राम को वरण करती है, अर्थात् अपनी प्रीति राम से, राम यानी परमपिता परमात्मा से योग लगाती है। उपरोक्तानुसार यह स्पष्ट होता है कि रामायण को एक कहानी रूप में लिखा गया है कि भक्ति मार्ग में मनुष्य जो पतित हो गया है वह कम से कम रामायण के माध्यम से उस बताये मार्ग पर चलने की कोशिश करेगा।

जिसने मनुष्य रूप में जन्म लिया है वो कभी भी भगवान हो नहीं सकता। राम तथा कृष्ण भगवान हो नहीं सकते। ये तो देवता थे। परमपिता परमेश्वर तो निराकार, ज्योति-बिन्दु स्वरूप हैं। उनका नाम शिव है, शिव का अर्थ है कल्याणकारी।

विजयादशमी पर रावण को जलाते हैं फिर विजय प्राप्त करने के बाद भरत-मिलाप मनाते हैं। यह है भ्रातृत्व प्रेम की स्थिति। भाई भाई के स्नेह और सेवा की निशानी है। स्नेह की निशानी भरत मिलाप दिखाया है और सेवा की निशानी दीपमाला दिखाई है। इसके पश्चात राजतिलक दिखाते हैं। लेकिन बिना अष्टशक्ति के विजयादशमी तो मना नहीं सकते। यानी विजयादशमी के पहले अष्टमी मनाते हैं, क्योंकि बिना अष्टमी के आधार के विजयादशमी नहीं मना सकते। यानी बिना अष्टमी के विजय नहीं। अष्टमी यानी अष्टशक्ति प्राप्त नवदुर्गा। दुर्गा अर्थात दुर्गुण समाप्त कर सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद ही दशहरा मना सकते हैं। अष्टशक्तियाँ यानी सहनशक्ति, परखशक्ति, समाने की शक्ति, सहयोग शक्ति, त्यागशक्ति, निर्णय शक्ति, नियन्त्रण शक्ति और स्नेह शक्ति।

हनुमान या महावीर का अर्थ है—इस संगम युग में ही हनुमान ने पुरूषार्थ किया और ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया। अपने मान का हनन किया, इसलिये हनुमान कहलाये। उनकी आँखों में एकाग्रता, तथा अडोलता है। फिर हाथ में गदा है जो युद्ध की निशानी है। दूसरे हाथ में पर्वत दिखाते हैं जिसपर संजीवनी बूटी भी है। पर्वत को उठाना यानी ज़िम्मेदारी जिसका संगमयुग में अर्थ है हर मूर्च्छित आत्मा को होश में लाने की ज़िम्मेदारी। इस संगम-युग पर एक लक्ष्मण को ही नहीं बल्कि अनेकों लक्ष्मणों को परमपिता परमेश्वर की याद से जीवन दान दिया था। हनुमान को एक लाल लंगोटी छोड़कर पूरा शरीर नग्न दिखाते हैं। इसका अर्थ है इस संगम युग में उन्होंने अशरीरी बनने का पुरूषार्थ किया था जो वस्त्रहीन होने का प्रतीक है। हनुमान को बल का याद दिलाना पड़ता था जिससे कि वे बलवान कार्य करते थे इसलिए उनका नाम महाबली, महावीर है।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी के अवसर पर की गई ईश्वरीय सेवाएं

२३ अगस्त 1983 मंगलवार को रक्षाबंधन का पावन पर्व तथा 31 अगस्त 1983 बुधवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व सभी सेवा केन्द्रों पर बड़े धूमधाम से मनाया गया। सभी जगह रक्षाबंधन के दिन ब्राह्मण कुल भूषणों, युवा वर्ग तथा विशिष्ट व्यक्तियों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करके पवित्रता की सूचक राखी बांधी गई तथा अपनी कमियों को निकाल कर उसके स्थान पर अच्छाई ग्रहण करने की प्रतिज्ञा भी कराई गई। जन्माष्टमी के अवसर पर भी सभी जगह सुन्दर २ श्री कृष्ण की झांकियां सजाई गई तथा प्रदर्शनियों के द्वारा भक्त आत्माओं को तथा अन्य भावुक आत्माओं को यह स्पष्ट किया गया कि किस प्रकार हम शिव बाबा द्वारा ज्ञान व राजयोग की पढ़ाई पढ़ कर श्रीकृष्ण पुरी (सतयुग) में जाने के अधिकारी बन सकते हैं। विभिन्न सेवा केन्द्र, जहां से सेवा समाचार प्राप्त हुए हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं :—

भटिंडा, अनंतपुर, वारंगल, इटारसी, कोलाबा (बम्बई), मुलुंड (बम्बई), भीलवाड़ा, कृष्णानगर, लक्ष्मीनगर (दिल्ली), शिवसागर, आदिपुर, उज्जैन, खुर्शिदबाग, भंडारा, डीसा (गुजरात), हजरतगंज लखनऊ, भुवनेश्वर, चन्द्रपुर, ग्वालियर, जालन्धर, पूना, अमृतसर, चंडीगढ़, ऊटकमंड, अम्बाला कैंट, भरूच, जम्बूसर, रानी बाग, पटना, कल्याण, श्यामनगर (पं० बंगाल), गंगानगर, रूड़की, महू, गांधीनगर, शिलांग, मोगा, ग्रीन पार्क (दिल्ली), गोहाटी, नारायणगढ़ (नेपाल), तिनसुकिया, कलकत्ता, भावनगर, हासपेट, किदवई नगर (कानपुर), बांदा, नयागंज (कानपुर), जोधपुर वाड़मेर, बुरहानपुर, यवतमाल, मंगलोर, पाली, घाटकोपर, कटक, पेटलाद, सिरसा, फिजी, ऊना, सतना, ब्रह्मपुर, अहमदाबाद, गुमला, छतरपुर, पटियाला, नरसिंहगढ़, गोवा, पलवल, पुरी, झांसी, सीकर, रीवा, मणिनगर (अहमदाबाद), फिरोजपुर सिटी, अजमेर भिवानी, गोरखपुर, राजकोट, मालवीयनगर, जगाधरी, ककोड़, रांची, गुड़गांवा, मेरठ, बरनाला, दार्जिलिंग, रायपुर, कोलार, सांपला, निशातगंज (लखनऊ), मुजफ्फर नगर, तिरुपति, आनंद, हनुमानगढ़, सहारनपुर, शिमला, फिरोजपुर छावनी, काटोल, मेहसाना, होशियारपुर, कपूरथला, होसंगाबाद, चिकोड़ी, अंजार, जलगांव, सोलापुर, मुजफ्फरपुर, भोपाल, गुरदासपुर, सिरोही, फिरोजाबाद, बड़ौदा, ब्यावर, पटेलनगर (दिल्ली), बेलगाम, जटनी अमरावती, बीजापुर, जूनागढ़, हुबली, कोटा, जामनगर, सम्बलपुर बैंगलोर, बोकारो, लातूर, कोल्हापुर, इलकल, ऊंझा, कैथल, करनाल, जोगिन्द्र नगर, पालम, फरीदकोट, डेरा बसी आदि २। इतने समाचार प्राप्त हुए हैं कि सारा वर्ष भी इसी समाचार का ज्ञानामृत छप सकता है। स्थानाभाव के कारण केवल कुछ सेवा केन्द्रों के समाचार निम्न दिये जा रहे हैं :—

रतलाम सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सेवाकेन्द्र के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में गीता मंदिर में गीता ज्ञान राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी से अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। इसके अतिरिक्त आनन्द कालोनी, डी० आर० पी० लाइन, टी. आई. टी रोड तथा आफीसर कालोनी में आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए।

अकोला सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि माउंट आबू से अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षिका शीलू बहन के आगमन पर अमृतवाडी हाल में त्रिदिवसीय राजयोग शिविर प्रवचन माला का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त जिला सत्र न्यायालय के बार रूम अशोसिएशन में लगभग १५० वकील जजों के समक्ष तथा जिला कारागार में ५०० कैदियों के समक्ष प्रवचन किए गए।

अमृतसर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नौ बड़ी बड़ी फैक्टरियों में उद्योग में योग प्रदर्शनी लगाई गई, जिसके द्वारा अनेक मजदूरों व अधिकारियों को अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा मिली।

हैदराबाद सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सुलतान बाजार में तथा राम-मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए। रक्षाबंधन के दिन सभी वर्गों के वी० आई० पीज को तथा मुख्य जेल के लगभग ४०० कैदियों को राखी बांधी गई।

विकासपुरी (दिल्ली) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि युवा वर्ग के विकास हेतु रक्षाबंधन के दिन विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें 'युवा-विकास' कैसे हो इस विषय पर प्रकाश डाला गया। रक्षाबंधन का महत्व बताते हुए जीवन में व्यवहार और आधार में शुद्धि लाने की प्रेरणा दी।

बरीपदा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बरीपदा की सेंट्रल जेल में ४०० कैदियों के समक्ष प्रदर्शनी तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसके परिणाम स्वरूप २०० कैदियों ने सप्ताह कोर्स किया तथा अब नियमित क्लास चल रही है। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में कई विशिष्ट व्यक्तियों को राखी का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करके पावन राखी बांधी गई।

मोदीनगर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्ती फरीदनगर में त्रिदिवसीय चरित्रनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। चैतन्य देवियों की झांकी भी सजाई गई, जिनके द्वारा लगभग ४००० आत्माओं को लाभ प्राप्त हुआ।

शाहदरा (दिल्ली) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जी० टी० रोड के पास तिकोने पार्क में तथा बिहारी कालोनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। साथ २ चार योग शिविर भी रखे गए। रक्षाबंधन के अवसर पर सार्वजनिक फंकशन रखा गया जिसमें 'सच्चा रक्षाबंधन' नाटक बहुत आर्कषक था। जन्माष्टमी के अवसर पर भी श्रीकृष्ण की सुन्दर झांकी बनाई गई जिसे हजारों भक्तों ने बड़ी रुचिपूर्वक देखा।

※

15 सितम्बर को ऋषिकेश पावनधाम के स्वामी भ्राता वेदान्तानन्द जी मधुबन, पाण्डव भवन में पधारे। उन्होंने कुछ दिन वहां रहकर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की गतिविधियों तथा ईश्वरीय ज्ञान से परिचय प्राप्त किया। वे दादी प्रकाशमणि तथा ब्र०कु० गोपाल जी के साथ विराजमान हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र०कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (E)—70